वार्षिक अंक : 2016–17

छात्राओं एवं अध्यापकों का

एक साझा रचनात्मक प्रयास

अपराजिता

नॉन कॉलिजियट वुमैन एजुकेशन बोर्ड

माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय

नई दिल्ली–02

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

महाविद्यालय प्रार्थना

सवैया

देह शिवा बर मोहि इहै शुभ करमन ते कबहूं न टरों।।

न डरों अरि सों जब जाइ लरों निसचै कर आपनी जीत करों।।

अरु सिक्ख हों आपने ही मन कौ, इह लालच इउ गुन तउ उचरों।।

जब आव की अवध निदान बनै, अति ही रन में तब जूझ मरों।।

गुरू गोबिन्दसिंह जी, दसम ग्रंथ, पृष्ठ सं. 99

Savaiya

Grant me just this boon, o Sovereign Lord !

May I Never Shirk from doing righteous deeds;

Mai I fight, without flinching, All Adversaries in the

Battle of life and vanquish them decisively

As a Sikh, May I redeem my mind from the vice of attachment

And even when imminent death approaches my mortal life

May I embrace it fighting unwaveringly

Guru Gobind Singh Ji, Dasam Granth, Page no. 99

Message

Dear students

It is my extreme pleasure to write this message for yet another issue of NCWEB Mata Sundri College for Women Center E- Magazine. It is our action and behavioral that make us beautiful. I hope that not only will all students study well but also learn the ethics and communication skills, adaptability and the ability to participate in team work to lead a fruitful life as capable global citizens. Remember leaders are those who do not follow the beaten path but create new roads…

I wish to all students, Teachers and the staff a very bright future.

Anju Gupta

Officiating Director

Non-Collegeiate Women's Education Board

(University of Delhi)

Message

The Magazine 'Aparajita' published by the Non-Collegiate Women's Education Board is the culmination of the efforts and endeavours of the Non-Collegiate Women's Education Board family. The Magazine provides a platform to students and faculty Members of the Non-Collegiate Women's Education Board to express their creativity and talents by publishing their poems, stories, articles etc. This endeavour will help students unlock their treasure trove of imagination and creativity.

I deeply appreciate and congratulate the students, teachers, staff and Dr. Lokesh Gupta, Teacher-In-charge, Mata Sundri College centre for making valuable contribution in publication of the Magazine 'Aparajita' and wish all of them success and a bright future.

Dr. Kawarjit Kaur

Principal (Offg.)

Message

The concept of excellence is novel investment that teaches to enhancement and enrichment. In this context Mata Sundri College for Women under Non Collegiate Women Education Board by publishing this E-magazine has created an extremely well structured environment that facilitates and exchanges creativity, critical thinking and confidence among its students. This publication will definitely boost the students to move from innovation to invention and discover their innate potential.

Dr. Lokesh Kumar Gupta

Teacher-in-Charge

Non Collegiate Women Education Board

संपादक की कलम से

जब भी कलम उठती है तो बहुत कुछ कहती है। एक–एक अक्षर समेटती कितना कुछ कह जाती है। जिन भावों ने कभी शायद सोचा भी न होगा कि वो बाहर आएंगे, कलम उन्हें भी खींच लाती है गहरे कोटरों से और बयां करती चलती है इंसान के साथ भावों की पैदाइश का एक चिरकालीन इतिहास। एक ऐसा इतिहास जिसमें समाए हैं न जाने कितने युग और युगों की क़िताब में सिमटी न जाने कितनी कहानियां! जो पानी के बुलबुलों की तरह ज़िंदगी के स्मृत–अंशों में उठती हैं, कुछ क्षण ठहरती हैं और फिर विलीन हो जाती हैं ज़िंदगी के स्मृत अंश के साथ ही विस्मृति के अथाह, अदृश्य महासागर में। बुलबुलों के उठने और विलीन होने का यही क्रम या छोटा सा टुकड़ा ही तो ज़िंदगी है, जिसमें बादशाहत है उन्हीं संकोची भावों की जिन्हें क़लम खोज लाती है गहरे कोटरों से...

फिर कहिए जनाब कि भाव अवाक् होकर भी अवाक् कहां? असल में उन्हें क़लम के रूप में एक ऐसी ज़ुबान मिली है जो उनकी असली ताक़त है और उनके अब तक ज़िंदा होने का प्रमाण भी वरना आंखों ने तो उन्हें कबका झुंठला दिया था। ये पत्रिका भी एक ऐसा ही प्रमाणपत्र है या यूं कहें कि एक ऐसा आईना है जिसमें डूबते–उतराते न जाने कितने भावों की झलक है, जिन्हें शायद आप का दिल बखूबी पहचान सके या कि हो सकता है कि उनके साथ आपका दिल एक नज़दीकी रिश्ता भी क़ायम कर सके। उन्हें आप भाव कहें या शब्द कहें बात एक ही है। ठीक वैसे ही जैसे–**गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।** कलम इसी अभिन्न भाव को वहन करती है। यही अभिन्नता उसकी छाप को अमर कर जाती है। भावों से अभिमंत्रित शब्दों को ब्रह्मत्व प्रदान कर जाती है।

ख़ैर ब्रह्म को गढ़ने वाली यही क़लम अब और भी हाई–टेक हो गई है क्योंकि एक तो अब उससे उम्मीदें बहुत बढ़ गईं हैं और इसीलिए उसकी ज़रूरत भी। यही वजह है कि वक्त की नब्ज़ को समझते हुए क़लम अब उंगलियों की गिरफ़्त से मुक्त हो गई है। उसके इशारे पर अब दसों उंगलियां थिरकती हैं और क़लम की विरासत को ऐसे आगे बढ़ाती हैं कि क्या कहिए। और ठीक भी है। यही तो विकास है। उन्नति की दिशा में बढ़ता चरण। पर भाव? वो नहीं बदले। युगों पहले जिस रूप में रहे होंगे अब भी उसी रूप में हैं। और क्यों न हों आख़िर शब्द निर्विकार ब्रह्म ही तो हैं। यही वजह है कि अब भी अपने चिरकालिक रूप में मौजूद हैं, हर तरह के बदलाव को दरक़िनार करते हुए। तभी तो इन पन्नों में ज़िंदगी के तमाम रंगों में रंगे भावों की बादशाहत है।

यहां बेटी का दर्द अब भी है भले ही सदियों से बेटियां ससुराल जाती रही हों, पर इससे उनका दर्द कम नहीं हुआ है बल्कि दहेज की आग ने उस दर्द और तक़लीफ को और गहरा बना दिया है। ऐसे में महसूस होता है जैसे पुरुषवादी सोच के आगे सब भावहीन है। या कि शायद यह व्यवस्था ऐसे शून्य को जन्म देती है जहां एक मासूम लड़की की भावनाएं कोई महत्व नहीं रखतीं। मगर फिर भी स्त्रीवादी सोच यहां मौजूद है जो पुरुषवादी मानसिकता के बरक़्स *अपने वजूद की तलाश* में है।

इस पत्रिका में डायरी का एक बेहद निजी पन्ना भी है, जिसमें समाए हुए हैं एक प्यारे पापा। एक ऐसे पापा जो अपने परिवार को अच्छा जीवन–स्तर देने के लिए अपने स्वास्थ्य की भी परवाह नहीं करते, और अपने बिलखते बच्चों को छोड़ विदा ले लेते हैं इस दुनिया से। उफ! कितने युग बदल गए पर एक पिता का हृदय नहीं बदला! यही तो इतिहास है भावों का। युग बदल जाता है, लोग बदल जाते हैं पर भाव नहीं बदलते।

अच्छे से अच्छा करने की चाह, यशस्वी बननेकी चाह किसमें नहीं होती पर अपनी मेहनत से किए गए को कोई ख़ारिज करदे, बिना यह जाने कि जो भी किया गया है उसे असल में किसी ने अपनी आत्मा के अंश से संवारने की कोशिश की है। ऐसे में तक़लीफ होना लाज़मी है। पर सच्चाई यह है कि ख़ारिज होना भी तो अनुभव है। अन्यथा अपनी ही दुनिया में खोए एक कलाकार को यह कैसे पता चलेगा कि वह, उसकी कृति उसके लिए जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी समाज के लिए नहीं है। समाज तो बस अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार किसी भी चीज़ को स्वीकृत या अस्वीकृत करता है। इस अस्वीकृति से निराश होना असल में नादानी है और अस्वीकृति को स्वीकार कर उससे प्रेरणा लेना परिपक्वता। पत्रिका में इसकी भी झलक है।

अनगिनत भावों के समान ही प्रेम भी जीवन का शाश्वत सत्य है। प्रेम जब होता है तब नैसर्गिक आनंद का भाव जगता है और जीवन नए सौम्य रंगों में रंग जाता है। भावों में सहज ही हिमालय सी उदात्तता और नदी से गहनता आ जाती है, बशर्ते हिमालय रूपी शिव जड़ पहाड़ बनकर सोए न हों। अन्यथा नदी रूपा पार्वती की तपस्या के आगे पहाड़ से हिमालय बने शिव की जड़ता को फैमिनिस्ट आंख कभी माफ नहीं करेगी भले ही इस यूटोपियन प्रेम के कितने ही जस्टीफिकेशन क्यों न हों।

एकांतिक प्रेम के समान ही प्रेम का भ्रम भी अस्वीकार्य है। पर समस्या यह है कि भ्रम और प्रेम में से क्या भ्रम है और क्या प्रेम इसकी परख कैसे हो क्योंकि प्रेम की स्थिति में मस्तिष्क कुंद हो जाता है। या यूं भी कह सकते हैं कि हृदय की तानाशाही के आगे मस्तिष्क बेचारे की एक नहीं चलती। ऐसे में यही होता है कि भाव बेचारे भ्रम के छद्म में ठगे जाते हैं और रह जाता है एक उदाहरण कि भावों का भी छद्म इस दुनिया में मौजूद है, जो प्रेम के नाम पर कोमल हृदयों को ठगता है। इसलिए बेहतर यही है कि प्रेम में भी मस्तिष्क को साथ रखिए क्योंकि मस्तिष्क की व्यवसात्मिका बुद्धि आपको ठगे जाने से बचाएगी। अन्यथा भावों का छद्म जीवन पर भारी पड़ सकता है।

ऐसे ही अनगिनत भावमय रंगों में रंगी पत्रिका आपके सामने है, जिसमें केवल इतना ही नहीं और भी बहुत कुछ है। इतिहास और मानव–मन को खंगालते हुए विचारात्मक लेख और युवा मन की झलक प्रस्तुत करती कविताएं जिनमें बीज हैं भविष्य के। ख़ैर बहुत कुछ कहा जाना बाकी है यह तो अभी झरोखा है, पूरा घर तो अभी बाकी है।

डॉ. विभा नायक

Content

1. संसार की रीति — कोमल
2. अस्मितावान कवि कबीर — डॉ. मुकेश कुमार
3. प्रेम प्रपंच — ज़ीनत
4. प्यारे दोस्त — लक्ष्मी देवी
5. पुरुषों की दुनिया में अकेली–सी मैं — पूजा माला
6. एक नदी की साधना — डॉ. विभा नायक
7. मेरे प्यारे पापा — ज्योति कुमारी
8. लिखना है मुझे — चारुल
9. सपनों भरी आंखें — डॉ. दीपमाला
10. मेरे सपनों का भारत — सोमैया रियाज़
11. दहेज एक सामाजिक जरूरत है — मिस्बाह
12. स्वच्छ भारत — डॉ. जितेन्द्र कुमार
13. एक कविता हर मां के नाम — भूमिका खुराना
14. छोटी सी ज़िंदगी की इतनी सी कहानी है — इंसीया
15. तलाश अभी जारी है — डॉ. मनोरमा
16. ज़िन्दगी की रेस — मोनिका
17. गुरु का महत्व — हुमा परवीन
18. रिश्तों का सफर
19. खुशी — फरहा सलीम
20. बदलाव — सोनिया
21. यूं ही नहीं कहती मैं — आरती वर्मा
22. जीतने वाला हारने वाला — जूली
23. कविता — डॉ. अनिरूद्ध कुमार सुधांसु
24. तू किस लिए उदास है
25. मां — डॉ. दीपा
26. ए निराशा जान ले — डॉ. दीपा
27. Me — Sandhya Jha
28- THE EXMAINATIONS : BEGINNING OR END — S. K .S. Maan
29. Infant Heart — Mahima Sharma
30. Poem of Life
31. A girl child is god's gift — Priyanka Garg
32. Childhood — Farha Saleem
33. Mom — Tripti Sharma
34. Father's Tear — Gunjan Walia
35. At Dark — Laxmi Mathur
36. In the rain — Karishma Sharma

37.	My Knowledge and Interest	Nikita
38.	Memories of My School Days	Nikita
39.	Globalisation and teaching technical English	Dr. Nivedita Sinha
40.	The girl Child in India	Monica Bisht
41.	The best memories in my life	Monika Sharma
42.	A Nightmare	Bhumika
43.	Fantasy	Monica bisht
44.	Talwin Town	Mahima Sharma
45.	Horror story of a Spirit	Priya
46.	A Lady	Vaani
47.	A baby girl	Monika
48.	Natinalism	Mr.Rakesh Kumar

Ability is of little account without opportunity.

यदि अवसर का लाभ न उठाया जाए, तो योग्यता का कोई मूल्य नहीं होता है।

(Nepolean)

संसार की रीति

कोमल
बी0ए0 प्रोग्राम तृतीय वर्ष

एक नगर में एक मशहूर चित्रकार रहता था। एक बार चित्रकार ने बहुत ही सुंदर तस्वीर बनाई और उसे नगर के चौराहे पर लगा दिया। नीचे लिख दिया कि जिस किसी को जहां भी इसमें कमी नज़र आए वह वहां निशान लगा दे। जब उसने शाम को तस्वीर देखी तो उसको पूरी तस्वीर निशानों से खराब मिली। यह देख चित्रकार बहुत दुखी हुआ। उसे समझ नहीं आया कि क्या करे तभी उसका एक मित्र वहां से गुज़रा उसने उससे दुखी होने का कारण पूछा तो चित्रकार ने पूरी बात बताई। चित्रकार की बात सुनकर मित्र ने कहा कि अब तुम एक और तस्वीर बनाओ और उसके नीचे लिख दो कि जहां भी कम नज़र आए उसे ठीक कर दो। चित्रकार ने ऐसा ही किया। पर आश्चर्य की बात उसे अब चित्र पर कोई निशान नहीं मिला। चित्रकार ने यह बात अपने मित्र को बताई। मित्र ने कहा यही बात तो मैं तुम्हें समझाना चाहता था कि दुनिया की रीति दोष निकालने की है, दोष को ठीक करने की नहीं है। दूसरों में दोष निकालना आसान है पर स्वयं निर्दोष कार्य करना या दोष ठीक करना अत्यंत कठिन है। जब दुनिया कहती है कि हार मान लो तो आशा धीरे से कहती है कि तुम ही समर्थ हो, पुनः प्रयास करो क्योंकि– यही जीवन है।

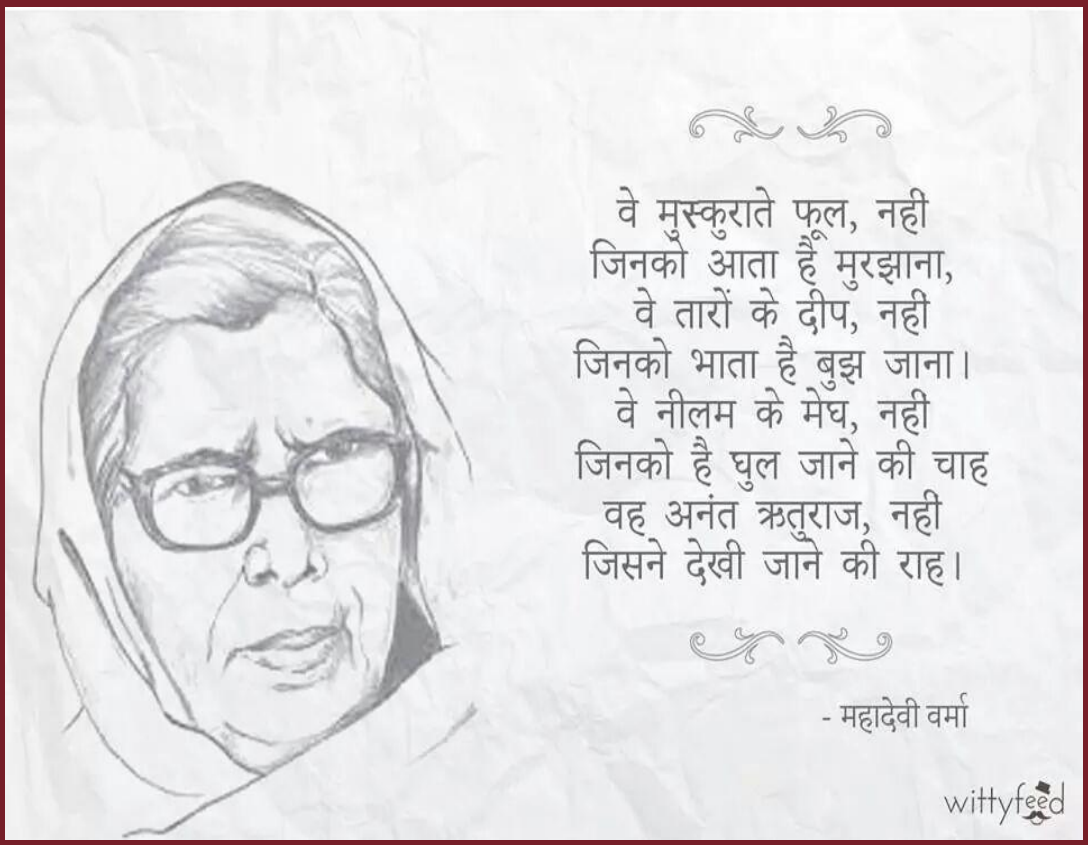

अस्मितावान कवि कबीर

डॉ मुकेश कुमार

संत कबीर सिद्धांत और व्यवहार दोनों रूप में बड़े सेतु का कार्य करते हैं। इसीलिए वे हमारे अतीत को जानने में अहम् भूमिका निभाते हुए तथा उसे आधुनिकता से जोड़ते हुए प्रतीत होते हैं। उन्होंने प्रेम के आधार पर मनुष्य मात्र की एकता की घोषणा की ओर निम्न वर्ग की जनता में आत्मगौरव का भाव जगाया। भारतीय संस्कृति, संस्कार को अपने अनुभवों के आधार पर विश्व चेतना का मार्ग प्रशस्त करना संत कबीर की हिंदी साहित्य को अनुपम देन है।

भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत में हुई। पांचवी शताब्दी में आलवार भक्तों ने वर्ण–व्यवस्था को चुनौती दी। ये आलवार कृष्ण भक्त थे। इसी आंदोलन के दूसरे कर्णधार शैव भक्त और लिंगायत थे। ये भी निम्न जाति के ही थे। इन संतों ने समाज में व्याप्त सामाजिक धार्मिक भेदभावों का विरोध किया तथा भक्ति के द्वार आम जनता के लिए खोल दिए।

भक्ति आंदोलन को उत्तर में लाने का श्रेय रामानंद को है। उन्होंने अपने द्वारा स्थापित रामानंद संप्रदाय में प्रवेश का अधिकार उन वैष्णवों को भी दे दिया जो जन्म से शूद्र अथवा मुसलमान थे। अपनी इसी उदारवादी विचारधारा के कारण रामानंद के शिष्यों की संख्या बहुत अधिक है और उनमें पर्याप्त विविधता भी है। उनके शिष्यों में कबीर, अनंतानंद, सुखानंद, सुरसुरानंद, पद्मावती, पीपा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

रामानंद की इसी उदार विचारधारा का प्रभाव उनके प्रिय शिष्य कबीर के अलावा अन्य प्रादेशिक संतों पर भी पड़ा। 16वीं शताब्दी के अंत में कबीर के समान ही दादू दयाल ने न हिंदू और मुसलमान होने की घोषणा की। उन्होंने जाति भेद का खंडन किया और धर्मनिरपेक्षता की भावना का प्रचार और प्रसार किया। 17वीं शताब्दी में बखना जो कि जाति के मिरासीदार थे, राजस्थान के संत कवि हुए। बुल्ला साहब कुर्मी जाति के थे, संत कवि दरिया मेवाड़ में जन्में मुसलमान थे। धुनिया साहब रूई धुनने का काम करते थे।

भक्ति आंदोलन की निर्गुण धारा की कविता भारत की श्रमजीवी जनता के जीवन की वास्तविकताओं और आकांक्षाओं की कविता है जिसके प्रवर्तक और प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। कबीर ने अपने समय के भारतीय समाज में धर्मों, जातियों और संप्रदायों में फैले भेदभाव और उससे उत्पन्न द्वेष और धृणा के भीषण सच को देखा था। उन्होंने यह सच घर में रहकर नहीं अपितु बीच बाज़ार में खड़े होकर इस कड़वे सच का अनुभव किया था और इसकी विकरालता को देखकर वे दुखी भी थे–

सुखिया सब संसार है खावै और सोवै

दुखिया दास कबीर है जागै और रोवै।

गौतम बुद्ध के पश्चात् कबीर सबसे बड़े जाति विद्रोही थे। उन्होंने वाणी को संस्कृत के कूप जल से निकाल कर देशी भाषाओं के बहते नीर में स्नान कराया। इस प्रकार उन्होंने संस्कृत के खिलाफ जनभाषाओं की विजय पताका फहराई और संस्कृति का नेतृत्व उच्च वर्गों से छीनकर निम्नवर्गों के हाथ में दे दिया। वस्तुतः कबीर एक ऐसे समाज की परिकल्पना करना चाहते थे, जिसका आधार मनुष्य मात्र का प्रेम हो। सभी मनुष्यों में स्वतंत्रता, एकता, बंधुता तथा मानवीय मूल्यों का अथाह महासागर हो। उनके इन्हीं गुणों के कारण गुरु ग्रंथ साहिब में उन्हें उच्च स्थान दिया गया है। कबीर की वाणी वर्तमान समय में उन लोगों के लिए सीख है जो धर्म, भाषा तथा जातीयता के नाम पर लोगों को डराते, धमकाते तथा समाज में हिंसा फैलाते हैं और अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकते हैं। हम उसी व्यक्ति के पीछे चलना चाहते हैं जिसका व्यवहार हमें मानसिक शांति एवं उच्चादर्श के प्रति उन्मुख होने की प्रेरणा प्रदान कर सकें।

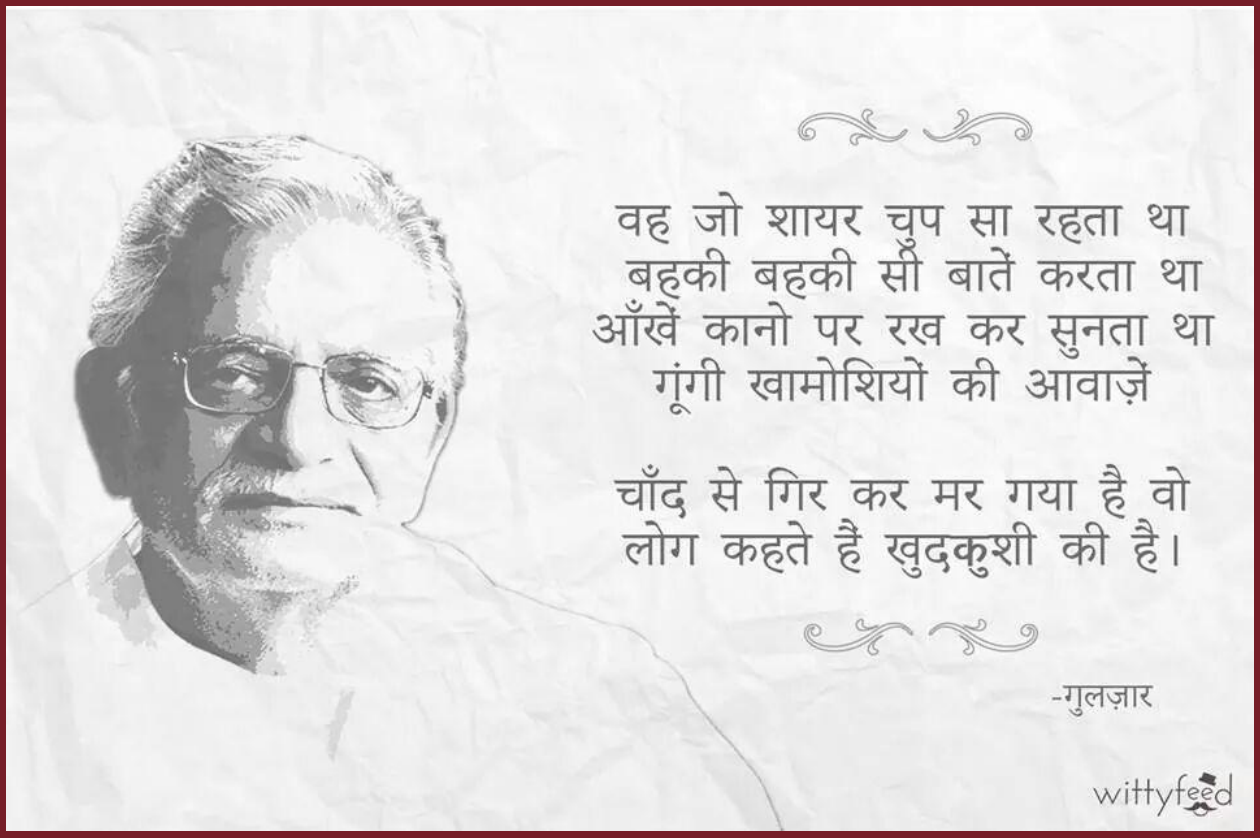

In the final Analysis, you should not measure your success by what you have accomplished, but by what you should have accomplished with your ability?

(Cliare Staples Lewis)

प्रेम प्रपंच

कहानी

ज़ीनत

बीए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

मेरी कक्षा में एक छात्रा थी, उसका नाम था रिहाना। वह पढ़ाई में कमज़ोर थी या उसकी पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी। वह पीरियड गोल करती थी और उसकी सहेलियां भी उसी की तरह थीं। उसी साल हमारी क्लास में एक लड़की का दाख़िला हुआ जिसका नाम था आशी। आशी देखने में बहुत सुंदर थी। क्लास की सभी लड़कियां उसकी सुंदरता की बहुत तारीफ करती थीं। पर धीरे–धीरे पता चला कि उसका ध्यान भी पढ़ने–लिखने में नहीं है और केवल सजना–संवरना ही उसकी रुचि है। यहां तक कि आशी उम्र में भी काफी बड़ी थी। जब बच्चों ने उससे उसके बड़े होने का कारण पूछा तो उसने कहा कि मकान बदलने के कारण मेरी पढ़ाई छूट गई थी इसीलिए मेरे चाचा जो कि इसी स्कूल में लड़कों के अध्यापक हैं की सिफारिश से मुझे ले लिया गया है।

आशी और रिहाना की दोस्ती हो गई और दोस्ती क्या रिहाना धीरे–धीरे आशी के रंग में रंग गई। वह स्कूल न आकर आशी के साथ घूमने जाने लगी। दोनों बाहर जाकर लड़कों के साथ घूमतीं–फिरतीं। आशी का भाई जो उसे अक्सर स्कूल छोड़ने आता था, धीरे–धीरे रिहाना की ओर आकर्षित होने लगा। समय बीतता चला गया और दोनों की दोस्ती प्यार में बदल गई। पर रिहाना और रवि दोनों अलग धर्म से थे। इसलिए रिहाना को डर था कि उसके प्रेम को उनके घर के लोग स्वीकार नहीं करेंगे। पर रवि और आशी ने रिहाना को समझाया कि अब ये पुरानी बातें हो गईं हैं और दोनों परिवारों में कोई दिक्कत नहीं होगी। हम तुम्हारे परिवार को भी मना लेंगे। और अगर कोई नहीं माना तो हम भागकर शादी कर लेंगे मगर अपने प्रेम को शादी का नाम ज़रूर देंगे।

कक्षा की आख़िरी परीक्षा होने से कुछ दिन पहले ही रिहाना के पिता की मृत्यु हो गई। उसने पढ़ाई भी छोड़ दी। लगभग एक महीने बाद उसने अपनी शादी का प्रस्ताव अपनी मां के सामने रखा तो उसकी मां के पैरों तले की तो जैसे ज़मीन ही खिसक गई। उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। लेकिन रिहाना ने तो जैसे ज़िद ही ठान रखी थी कि मुझे रवि से ही शादी करनी है। रिहाना को परिवार वालों ने बहुत समझाया। मारा–पीटा भी पर वह अपनी बात से टस से मस नहीं हुई। रिहाना के परिवार के लोगों ने उसके लिए रिश्ता तलाशना भी शुरू कर दिया पर उसने धमकी दी कि अगर ऐसा कुछ किया तो मैं घर से भागकर चली जांउगी पर शादी रवि से ही करूंगी। हारकर रिहाना की मां ने हामी भर दी। कुछ दिन बाद ही रिहाना ने आशी और उसके भाई को अपने घर बुलाया। दोनों ने अपने मीठे व्यवहार से रिहाना की मां ही नहीं परिवार के सभी सदस्यों का भी मन जीत लिया। रिहाना की मां जैसे आश्वस्त हो गईं कि भले ही दूसरे धर्म का है पर बेटी को अच्छा पति मिलने जा रहा है। फिर क्या था धूमधाम से रिहाना की शादी कर दी गई। मां ने अपनी हैसियत के हिसाब से जितना दे सकती थीं उससे कहीं अधिक देकर अपनी रिहाना को विदा किया।

रिहाना को भी जैसे उसके सपनों का संसार मिल गया। आशी और रवि उसका बहुत ध्यान रखते। पर लगभग चार महिने बाद आशी ने रिहाना से कहा कि कुछ पैसों की ज़रूरत है जाकर अपनी मां से लेकर आओ, वो बहुत पैसे वाली हैं। सुनकर रिहाना ने कहा मां से क्यों उनपर तो अभी भी शादी के लिए लिया गया क़र्ज़ चढ़ा है, तुम्हारे भैया की कमाई से ही बचत करूंगी और तुम्हारी सारी फरमाइशें पूरी करूंगी। रिहाना की बात सुनकर आशी ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा पर कहा कुछ नहीं। शाम को जब रवि आया तो जैसे उसे सब पता था। आकर रिहाना से बोला– सुन मेरी है कांट्रेक्ट की नौकरी, जो अगले महिने खत्म हो रही है। या तो अपनी मां के पास जाकर मर या फिर उससे पैसे लेकर आ। मैं तेरे लिए नहीं कमाता कि तू उसमें से बचत करे, समझी??

रिहाना को झटका सा लगा कि ये क्या हो रहा है। उसे इतना प्यार करने करने वाला रवि और उसकी दोस्त आशी को क्या हो गया है? उस दिन के बाद से रवि ने उससे बात करना बंद कर दिया। अब रवि उसके कमरे में भी नहीं आता था। आशी भी पूरी तरह से बदल चुकी थी। हद तो तब हो गई जब रवि और आशी बात–बात पर उसपर हाथ भी उठाने लगे। एक दिन रिहाना अपनी मां से मिलने आई। अपनी फूल सी नाजुक रिहाना को यूं मुरझाया देख मां की छाती धक से रह गई। बहुत पूछने पर रिहाना ने मां को सब बता दिया। पर मां कर भी क्या सकती थी, निराश रिहाना वापिस अपने ससुराल लौट आई। रवि ने तो पहले ही उससे संबंध समाप्त कर लिए थे वह चुपचाप अपने कमरे में पड़ी–पड़ी रोती रही और रोते रोते ही कब उसकी आंख लग गई उसे पता ही नहीं चला। अचानक रात को उसकी आंख खुली तो वह पानी पीने के लिए उठी, पर रसोई के बगल के कमरे में उसने जो देखा उसकी आंखें खुली की खुली रह गईं। वह भागकर अपने पति के कमरे में गई और उसे जगाया। रवि आंखें मलते हुए उठ बैठा और चिल्लाकर बोला कि यहां क्यों आई है? रिहाना बदहवास सी थी उसने कहा कि आशी और चाचाजी के गलत संबंध हैं। यह सुनकर रवि हंस पड़ा और बोला उसकी खूबसूरती के तो सब दीवाने हैं तो चाचा नहीं होगा क्या? चल मर यहां से उसी की वजह से ये घर चलता है, समझी तू और अपनी औकात में रह। रिहाना को लगा कि उफ कितने गंदे परिवार में आ गई है वो उसने आंसू पोंछते हुए कहा मैं पापा जी को ये बात ज़रूर कहूंगीं। इसपर रवि बोला– जा कहदे जैसे उन्हें कुछ पता ही नहीं। वो हमारे नाम के बाप हैं।

रिहाना को ऐसा लगा जैसे कि उसकी दुनिया खत्म हो गई है। उसने ठान लिया कि अब इस नर्क में नहीं रहूंगी। पर इससे पहले कि वो घर से निकल पाती रवि और आशी ने ऐसा किया जिसका उसे डर था। उसे कमरे में बंद करके उसपर पेट्रोल डाल दिया और उसे जलाकर मार दिया। पुलिस और सबके सामने यह बात साबित कर दी गई कि रिहाना ने आत्महत्या की है। न जाने रवि के घड़ियाली आंसुओं न या फिर पुलिस को दी गई रिश्वत ने रिहाना की हत्या को आत्महत्या सिद्ध कर दिया। बेचारी मां जानती थी कि उनकी रिहाना ऐसा नहीं कर सकती अपना सबकुछ बेचकर उसने रवि और आशी पर केस कर दिया पर ताकत के आगे सच हार गया और बेचारी मां रोते–रोते एक दिन स्वर्ग सिधार गई। पर हां पुरुषों की इस दुनिया में रवि का बाल भी बांका नहीं हुआ। उसकी शादी हो गई है और सुना है दहेज में उसे बहुत धन मिला है और क्यों न

मिले आख़िर इतना शरीफ और क़ाबिल दामाद जो मिला है लड़की के परिवार वालों को। आशी भी बड़ी गाड़ियों में घूमती–फिरती है। सुबह अनजान लोगों के साथ और शाम को अपने सगे चाचा के साथ।

ख़ैर, शरीफों की बस्ती में शायद ऐसा ही होता है।

प्यारे दोस्त

लक्ष्मी देवी

साथियो, हम सभी की ज़िंदगी में दोस्त शब्द आम है। दोस्ती के बिना सोचिये तो हमारा जीवन क्या संभव है? ऐसा बहुत कुछ जो हम किसी से नहीं कह पाते अपने दोस्तों से ही कहते हैं। उनसे लड़ते–झगड़ते हैं पर सच ये है कि उनके बिना हम रह भी नहीं सकते। मुझे अपने दोस्तों से बहुत प्यार है और मुझे पता है कि मेरे दोस्त भी मुझे बहुत प्यार करते हैं। ये हमारे दोस्त ही होते हैं जिनके ज़रिए हम खुद को जान पाते हैं। वो हमारी ताक़त भी होते हैं और कई बार कमज़ोरी भी। साथियो, मैं बस इतना कहना चाहती हूं कि इस दुनिया में दोस्ती करना और दोस्ती को निभाना असल में सबसे खूबसूरत चीज़ है। आप भी इस खूबसूरती को अपने दिल में उतारिये। बस शर्त एक ही है कि अच्छे दोस्त बनिये और अच्छे दोस्त बनाइये।

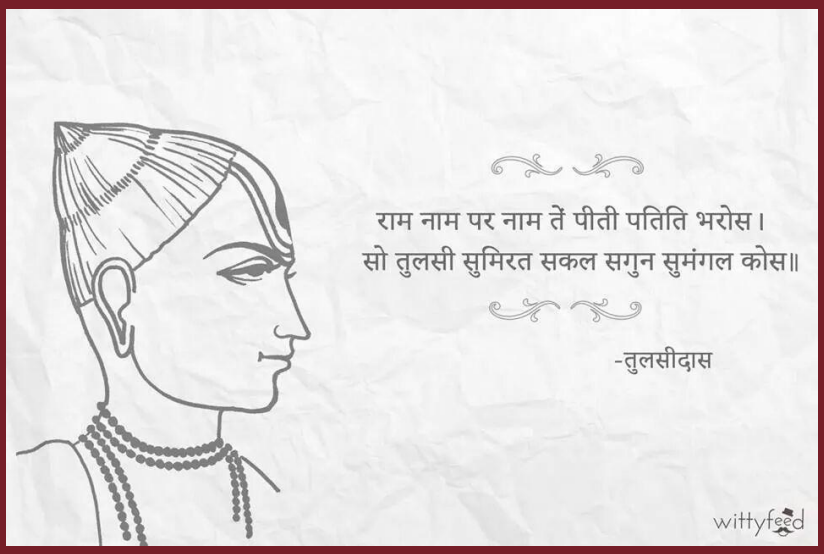

The mere act of aiming at something big makes you big.

किसी महान कार्य का संधान व्यक्ति को महान बना देता है।

पंड़ित जवाहरलाल नेहरु

पुरुषों की दुनिया में अकेली सी मैं

पूजा माला

बीए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

इस समाज में आरंभ से ही पुरुषों की प्रधानता रही है। हमारे समाज में महिलाओं पर जैसे पुरुषों का आधिपत्य है। महिलाओं का जीवन पूरी तरह से पुरुषों पर ही निर्भर है। और इस बात का घमंड पुरुषों को इस क़दर है कि वे अपने आगे महिलाओं को कुछ समझते ही नहीं हैं बल्कि और ज़रा सा कुछ कहने पर महिलाओं पर ही हावी होते हैं, उन्हें हमेशा कमबुद्धि, मूर्ख और ग़लत साबित करते हैं, फिर चाहे वे खुद ही ग़लत क्यों न हों।

अपनी इसी अकड़ और अक्खड़ रवैये के कारण ही वे बिना किसी शर्म–लिहाज महिलाओं पर अपमानजनक टिप्पणी करने से भी वो बाज़ नहीं आते। बल्कि अपनी बदतमीज़ हरकतों से महिलाओं को ही शर्मिंदा करते हैं। दुखद स्थिति तो तब हो जाती है जब महिलाएं स्वयं भी पुरुषों का साथ देते हुए महिलाओं पर ही उंगली उठाती हैं और पुरुष को यह कहने का मौका देती हैं कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है। ऐसे में पुरुष एक ओर तो अपनी ग़लत हरकत पर एक औरत का साथ दिये जाने से मन ही मन खुश होता है वहीं दूसरी ओर इस बात का प्रचार करता है कि महिलाएं ही ग़लत हैं और आजकल के ज़माने में, लड़के बेचारे सीधे–शरीफ हैं पर लड़कियों के दिमाग़ आसमान चढ़ गए हैं जो केवल अपने फायदे के लिए सीधे–सादे मर्दों को फंसाती हैं। कभी तंग कपड़े पहनकर, कभी ज्यादा हंस–हंसकर बात करके और कभी उनके साथ घूम फिर कर। और जब इस बीच बेचारे लड़के का ज़रा सा मन बहक जाता है तो फिर उसपर झूठा आरोप लगा देती हैं। ऐसी लड़कियां ही होती हैं जो आत्मनिर्भर होने के नाम पर अपने मां–बाप ही नहीं सभी महिलाओं का नाम डुबो देती हैं।

दिक्कत यह है कि इस प्रकार की बातों में खुद महिलाएं भी पुरुष की हां में हां मिलाती हैं। मैं अक्सर सोचती हूं कि महिलाएं ऐसा क्यों करती हैं? मुझे लगता है कि शायद इसलिए क्योंकि एक लंबी परंपरा ने उन्हें मानसिक तौर भी पुरुष का आश्रित बना दिया है। उसका विरोध करना जैसे उनके खुद के लिए एक चुनौती से कम नहीं होता होगा या फिर सच में उनके मन में कहीं यह बात जमी बैठी है कि महिलाओं को सहनशील होना चाहिए, ज़्यादा आवाज़ उठाकर बात करने से, भले ही बात सही क्यों न हो वे लोगों की नज़रों में आ जाती हैं। और अच्छी लड़की वही होती है जो चुपचाप रहे, किसी ने कुछ कह भी दिया हो तो सह ले, आख़िर सीता मैया भी तो ऐसी ही थीं। यही भारतीय संस्कृति है। मेरे मन में अक्सर यह सवाल भी उठता है कि संस्कृति का सारा बोझ लड़कियों, महिलाओं के सिर पर ही क्यों डाल दिया जाता है? लड़कों में लोग उन राम का चरित्र क्यों देखना चाहते हैं, जिन्होंने धोखे से अपनी गर्भवती पत्नी को जंगल में छुड़वा दिया! मुझे सच में यह लगता है कि जिसे हम संस्कृति कहते हैं, वो असल में धर्म की राजनीति है। ताकतवर द्वारा कमज़ोर को अपने पक्ष में रखने का प्रपंच भर है। इससे ज़्यादा संस्कृति भी कुछ नहीं है।

लड़कियों के शरीर उनके कपड़ों पर पूरे समाज की नज़र होती है। लड़कों के बारे में कोई कुछ क्यों नहीं कहता जब वो लो वेस्ट जींस पहनते हैं, हाफ निक्कर पहनकर घर–बाहर घूमते हैं, तौलिया बांधकर मोहल्ले का चक्कर लगा आते हैं तो संस्कृति की जड़ें क्यों नहीं हिलतीं, जब वो सामान्य बातचीत में मां–बहन की गालियां देते हैं, तब लोगों की नज़रें क्यों नहीं झुकतीं, जब वो सभ्य होने का बाना पहने आंखों से ही एक लड़की के शरीर को बेध डालते हैं, तब कोई उनसे रुष्ट नहीं होता, जब हर उम्र के पुरुष मेट्रो या बसों में भीड़ का फायदा उठाकर लड़कियों को ग़लत ढंग से छूते हैं, तब कोई उनसे कुछ क्यों नहीं कहता? जब वो हंसी–मज़ाक के नाम पर लड़कियों पर अश्लील टिप्पणियां करते हैं, तब सब कितना प्रसन्न होते हैं, किसी को कष्ट नहीं होता पर यदि लड़की थोड़ा खुलकर हंस ही ले तो समाज के ठेकेदारों की जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं, सबकी भंवें तन जाती हैं। लड़की का बलात्कार तक हो जाता है तो भी पुरुष को दोषी न मानकर लड़की पर ही सारा दोष मढ़ दिया जाता है। लड़की का पति और उसके ससुराल वाले उसे तंग करते हों तो कहा जाता है आजकल की लड़कियां ज़ादा पढ़–लिख गईं हैं इसलिए एडजस्ट नहीं कर पातीं। लड़कियों को ज़्यादा पढ़ाना–लिखाना ठीक नहीं है। और समाज के ठेकेदार महिलाएं और पुरुष एक स्वर में अपनी सहमति व्यक्त करते हैं।

यह सब देखकर ऐसा लगता है जैसे इस पुरुषवादी समाज में औरत की कोई जगह ही नहीं है और बलात्कार से भी लड़कियों को दिक्कत नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह आख़िर समाज के कुलदीपकों की ज़रूरत जो है। लड़कियां तो होती ही हैं यौनिक वस्तु!! पहले मुझे लगता था कि वो लोग कितने गंदे होते हैं जो अपनी बेटी की गर्भ में ही हत्या कर देते हैं या फिर उसे पैदा होते ही मार देते हैं। पर अब मुझे लगता है कि ऐसे लोग जो लड़कियों को पैदा होते ही मार देते हैं, दुनिया के सबसे अच्छे लोग और सबसे अच्छे माता–पिता होते हैं क्योंकि वो एक मिनट के दर्द के बदले में उन्हें जीवन के दारुण दुखों, निर्व्यक्त रह जाने वाली आत्मिक पीड़ा से बचा लेते हैं।

To Love is to admire with the heart; to admire is to love with the mind.

हृदय से प्रशंसा करना प्रेम करना है, मस्तिष्क से प्रेम करना प्रशंसा करना है।

(T. Gantier)

एक नदी की साधना

विभा नायक

एक था पहाड़ और एक थी नदी। टेढ़ा–मेढ़ा, रूखा–सूखा, एकदम नीरस। अपने इष्ट की तपस्या में लीन, दुनिया से बेख़बर एकदम वीतरागी तपस्वी सा। और एक थी नदी। अल्हड़ सी, छल–छल करती, चांदी सी मुस्कुराती, बहुत ही चंचल। दोनों का कोई मेल नहीं। मौन, आत्मलीन और खोया–खोया सा पहाड़ और जीवन की धुन पर गुनगुनाती नदी। पर ई”वर की माया! न जाने क्या हुआ उस नदी को कि उस रूखे पहाड़ से प्रेम कर बैठी। और सब कुछ भूलकर बन गई पहाड़ी नदी। नदी जानती है कि उसके पहाड़ ने उसे खींच लिया है अपनी ओर लेकिन ये बात और किसी को नहीं पता। तभी तो किसी से भी पूछो तो सब यही कहते हैं कि नदी तो अपने पहाड़ के साथ तभी से है जब से उसका पथरीला पहाड़। उसी के संग जन्मी, उसी में घुली–मिली सी। तभी तो उसी की खु”बू से महकती है वो नदी। पर देखो तो यह पहाड़ सच में बिल्कुल अबोध ही तो है, जो उसे नदी के प्रेम का आभास ही नहीं। वो तो जबसे जन्मा है तबसे खुद में ही डूबा है राम जाने! और देखो तो नदी के आने के बाद भी यूं ही डूबा हुआ है। पर लगता है नदी भी थोड़ी सी पगली है, तभी तो इस इस रूखे पगले पहाड़ से प्रेम कर बैठी। क्या पता नदी इसकी इसी अबोधता पर ही रीझ गई हो———— राम जानें।

गुज़रती हवाएं बताती हैं कि अखण्ड समाधि में लीन पहाड़ को नदी कैसे अपने प्रेम रस से सींचती है। कैसे उसकी रूखी–पथरीली देह को अपने निर्मल जल से स्निग्धता प्रदान करती है। पहाड़ चुपचाप ध्यानमग्न और नदी उसकी रुखाई को अपनी तरलता प्रदान करती है। उसकी आग सी तपती देह को शीतलता प्रदान करती है। विचित्र संयोग– पहाड़ निर्लिप्त नदी माया, पहाड़ वीतरागी नदी चंचल, पहाड़ मौन और नदी उसके मौन मंत्रों को आत्मसात् कर अपना कल–कल स्वर देती जैसे अपने आत्मस्थ ि”ाव के लिए स्तोत्र गाती पार्वती और तब ऐसा लगता जैसे पूरा वि”व प्रेम के अदृ”य तंतुओं से बंध गया हो।

इस विचित्र प्रेम को देखकर किसी ने कहा कि यही ओंकार है तो किसी ने कहा प्रकृति के प्रेम की साकार अभिव्यक्ति।

कहते हैं कि ऐसे ही न जाने कितने युग बीत गए। नदी यूं ही तपस्या करती रही साधना में लीन अपने निर्मोही वीतरागी तपस्वी की पर उसका तपस्वी वैसे ही आत्मस्थ, आत्मलीन, वीतरागी और अबोध सा।

युगों बाद जब एक दिन अचानक उस अबोध पहाड़ की समाधि खुली तो अचंभित सा वह क्या देखता है कि उसकी रूखी, तपती, पथरीली देह यूं हिमालय कैसे हो गई। आहह! किसने प्रेम रस से सींच दिया है उसकी रूखी–पथरीली देह को? पहाड़ हैरान! और ये क्या! इतना सौंदर्य! जीवन के इतने रूप! कल–कल की अनुकृति में कलरव करते कितने मधुरगान! और खुद उसकी ही सुगंध और दृढ़ता को धारण किए झूमते–लचकते ये अनगिनत वृक्ष और वनस्पतियां! कहां से आए ये सब?

जीवन का ऐसा अनुभव!! पहाड़ गर्व से झूम उठा कि ओह! मेरे देव का वरदान है यह। मेरी साधना का सुफल।

अपने इष्ट के भोलेपन पर नदी खिलखिलाकर हंस पड़ी। कहते हैं तभी से अल्हड़ नदी अपनी कल–कल ध्वनि में अपने आत्मस्थ हिमालय के कान में कुछ कहती है पर वो अबोध पहाड़ फिर से समाधिस्थ हो गया है अपने देव से एक और वरदान पाने को।

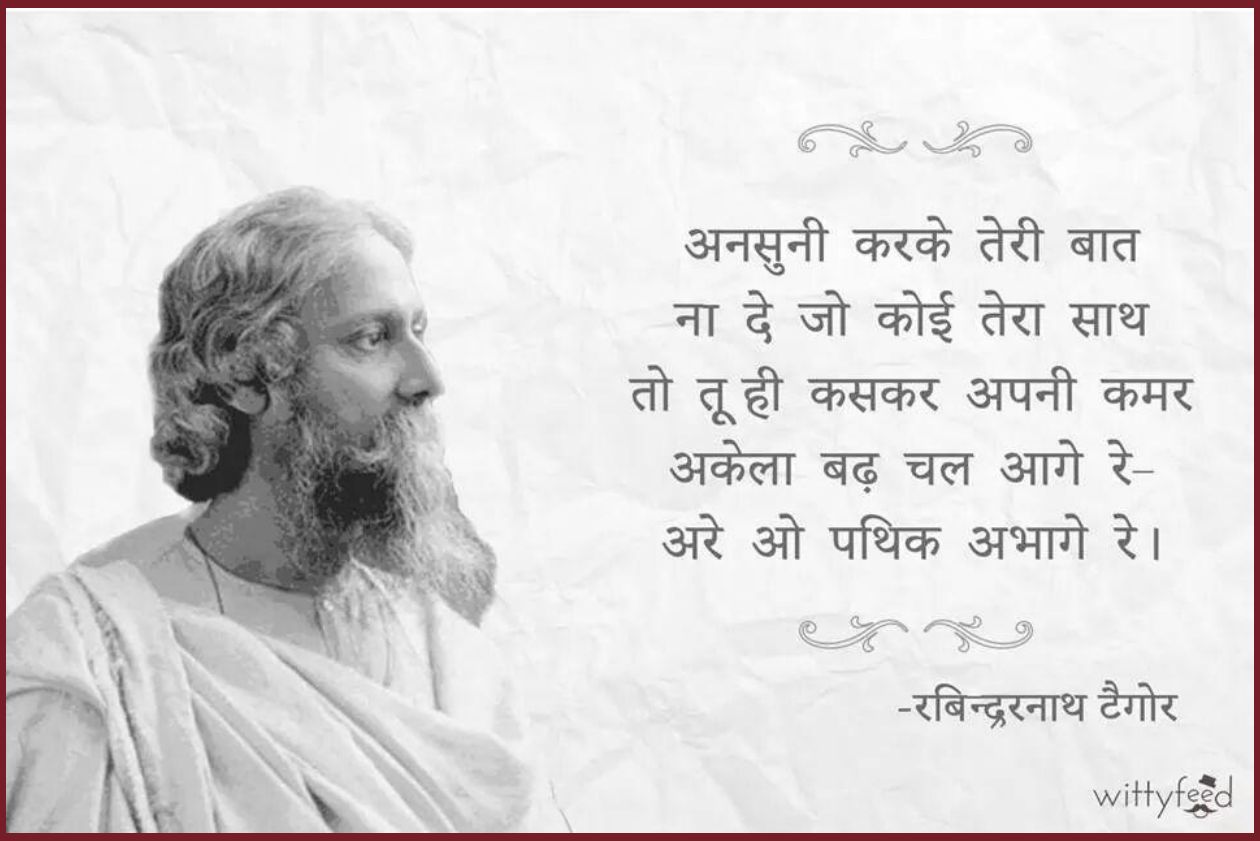

The best is the worst enemy of the good.

सर्वोत्तम उत्तम का सबसे बड़ा शत्रु है।

F.M. Valtaire

सपनों भरी आंखें

डॉ दीपमाला

जीवन में हर किसी का कोई न कोई सपना ज़रूर होता है, जिनको लगता है कि उनका जीवन में कोई सपना नहीं है वे वास्तव में रौश्नी में आंखें मूंदकर अंधेरा दिखने की घोषणा भर कर रहे हैं। कुछ ने तो इतना अंधेरा देख लिया है कि उनको आंखें खुलने पर भी अंधेरा नज़र आता है। कुछ वैसे ही जैसे भोर हो जाने पर हम खिड़की पर परदा लगाए और मुंह पर चदर डालकर रात होने का भ्रम बनाए रहते हैं। एक मिनिट कभी आपने अकेले बैठकर सोचा है कि आपके सपने क्या हैं? आप जब–जब यह कहते हैं कि आपका कोई सपना नहीं है तो वास्तव में आप अपने भीतर की नाउम्मीद और झेली गई उपेक्षा की मोटी परत के नीचे दब कर जीवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति निराशा ज़ाहिर करते हैं। जबकि सच यह है कि जीवन की अस्तित्व बिना किसी सपने के पूरा ही नहीं होा। कुदरत में बेवजह कुछ भी नहीं होता। आपको यह जीवन भी बेवजह नहीं मिला है। आपको यह जीवन मिला है ताकि आप अपने पैदा होने के उद्देश्य को पूरा कर सकें। आपके उस उद्देश्य का मूल मंत्र यह था कि आपके होने से यह दुनिया और अधिक खूबसूरत होनी चाहिए। खास बात यह है कि सबको बेहद शांति चाहिए। सबको सुकून चाहिए। पर शांति और सुकून की तलाश उस वक्त तक पूरी नहीं हो सकती जब तक कि आप अपने सपने को पूरा न कर लें।

जीवन में भरी तमाम उदासियों का महज़ एक ही सबब है कि आप उस सपने को भूल गए हैं जिसको पूरा करने के लिए आप इस धरती पर आए थे। पर यह बात हर आयु, वर्ग, धर्म, संप्रदाय और लिंग पर समान रूप से लागू होती है। जब तक आपका कोई सपना न हो, तब तक स्वयं को इंसान मानना भी मुश्किल है। आप जब भी कोई सपना देखते हैं वो कितना भी छोटा क्यों न हो, जब वो पूरा होता है तो आपका ही नहीं आपके आसपास के परिवेश पर भी इसका सकारात्मक असर पड़ता है। समाज की इकाई के रूप में भी आप अपनी सहभागिता को सुनिश्चित करने के लिए सपने देखना ज़रूरी है। जीवन में कितने ही गंभीर हालात क्यों न हों, उनको आप अपनी रचनात्मक प्रतिक्रियाओं के द्वारा ही बदल सकते हैं। वस्तुतः जो महिलाएं घरेलू हिंसा की बर्बरता से निराश होकर अकेली पड़ गईं हैं उनके पास भी दो ही विकल्प हैं कि या तो वे अपने जीवन को समाप्त कर लें या अपने जीवन को नए सिरे से आरंभ करें। दूसरे विकल्प का चुनाव आपके जीवन को एक नए आयाम तक ले जाने का अवसर प्रदान करेगा।

जब आप यह तय करते हैं कि आप विपरीत हालात का प्रभाव खुद पर नहीं पड़ने देते हैं और पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं तो आपके सामने हर पल एक नयी राह खुलती है। हालात से हार न मानने की ज़िद आपके भीतर वो काबिलियत पैदा करती है जिससे आप विषम से विषम परिस्थिति में कोई न कोई रचनात्मक हल खोज ही लेते हैं। आपके इन प्रयासों से समाज की अन्य महिलाओं को भी प्रेरणा प्राप्त होगी। देखिए जीवन में मुश्किल हालात सबके आते हैं पर जिनको अपने सपनों पर और खुद पर यकीन होता है, वे सबके लिए प्रेरणा बन जाते हैं। सार्वजनिक

जीवन में ऐसे तमाम उदाहरण मौजूद हैं जिनमें लोगों ने विपरीत हालात के बावजूद अपने सपने को नहीं छोड़ा और सबके लिए प्रेरणा बन गए। देखा जाए तो आज हम जिस आज़ाद देश में सांस ले रहे हैं वह भी कभी हमारे महापुरुषों का सपना था।

आपको लगता होगा कि सपने देखने की कोई उम्र होती है। पर सच में सपनों का और आपकी उम्र का आपस में कोई ताल्लुक नहीं है। आप जब चाहें सपने देख सकते हैं और उनको पाने में जुट सकते हैं। आपको बस एक बात हमेशा याद रखनी है कि आपके सपने ही आपकी पहचान हैं। यदि समाज में आपको कोई नहीं जानता तो इसका कारण यह नहीं कि समाज ख़राब है बल्कि इसका कारण यह है कि आप अपने आपसी संबंधों से खुश नहीं हैं। या यदि आप अपने वर्कप्लेस में सफल नहीं हो पा रहे हैं तो उसका भी एक ही कारण है कि आप उस काम को नहीं कर रहे हैं जो वास्तव में आपका सपना है। तो बस एक बार ज़रा देख लें कि कहीं आपका अपने सपने के अनुरूप काम न करना आपके जीवन के हर पहलू को तनावपूर्ण तो नहीं बना रहा।

आज के समय में जो उदासी और अकेलापन हमारे जीवन में घर करता जा रहा है और जिसे टीवी और मनोरंजन के तमाम साधन भी दूर नहीं कर पा रहे हैं, उसका एक बड़ा कारण है कि हम अपने सपनों से दूर हो गए हैं। सपनों से दूर होने का सबब यह भी है कि हमने उन्हें कभी सही से समझने का प्रयास किया ही नहीं। हम सबको यह बताया जाता है कि बड़े सपने देखने चाहिए। जबकि सच यह नहीं है। सपने सपने होते हैं। आपके सपने का महत्व इस बात से निर्धारित होता है कि उसे पाकर आपको खुशियां मिलीं कि नहीं। इसके साथ ही आपके आसपास के परिवेश को भी उस सपने से लाभ होना चाहिए। जब आपन अपना सपना पूरा करते जाते हैं जब आपको बेहद खुशी का ऐहसास होता है। यह खुशी अपने आप में बेमिसाल होती है क्योंकि जब आप अपने सपने को पूरा करने के लिए समर्पित जो जाते हैं तो आप हर रोज़ बेहतर होते जाते हैं। हर रोज़ बेहतर होने का मतलब है कि हर दिन आपका विकास होता जाता है। जब आप विकसित होते हैं तो आपको एक एहसास होता है जिसे ज़िंदा होने का एहसास कहते हैं। आपके सपने आपके जीवन की आत्मा हैं और यह आपकी नैतिक ज़िम्मेदारी भी है कि आप उन्हें पूरा करें।

जला है जिस्म वहां दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो ये क्यों खाक जुस्तजु क्या है।

स्वच्छ भारत

Dr. जितेन्द्र कुमार

गलियों में और छतो पर जमा हुआ गन्दा पानी
कूड़ा पड़ा जगह–जगह, हर शहर की यही कहानी
खिड़की से छत से, तो कोई चलती गाड़ी से फेंके
गंदगी कर दी इतनी, दिल्ली बनी गंदगी की निशानी

अब न होने देंगे गन्दा, लगायेंगे दिल-ओ-जान
सफल बनायंगे, अबकी बार स्वच्छ भारत अभियान

गुटखा, तम्बाकू, पान पर, अब होगी रोकथाम
नहीं करेगा कोई कही भी, शौच सुबह-शाम
बुरी आदते अस्म्भोवाली, धीरे-धीरे छोड़ेंगे
कूड़ा-कूड़ेदान में डालकर, करेंगे अपना नाम

साफ सफाई करेंगे ऐसी, के बढे विदेशी मेहमान
सफल बनायंगे, अबकी बार स्वच्छ भारत अभियान

न तो कूड़ा करेंगे, न कूड़ा होने देंगे
गंदगी का कोई बीज, न अब हम बोने देंगे
जागरूक होंगे इतना, सफाई के प्रति होंगे सजग
नहीं खुली आँखे जिनकी, न अब उन्हें सोने देंगे

चलता रहेगा ये मिशन, गंदगी का मिटेगा नाम-ओ–निशान
सफल बनायंगे, अबकी बार स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छता की ये मुहि, नमो न जाएगी बेकार
गंदगी करने वाले को, अब माननी पड़ेगी हार
शीशे-सी हर घर-गली होगी इतनी साफ
विश्व में होगा मेरा भारत, खुबसुरत बेशुमार

बनेगा सोने की चिड़िया, मेरा भारत महान
सफल बनायंगे, अबकी बार स्वच्छ भारत अभियान

मेरे प्यारे पापा

डायरी का पन्ना

ज्योति कुमारी

बीए प्रोग्राम

मेरे पापा दुनिया के सबसे अच्छे पापा हैं। जिस तरह मेरी मां घर संभालती हैं। हम सबका ध्यान रखती हैं उसी तरह मेरे पापा हम सबके लिए दिनभर खूब मेहनत करते थे वो कभी भी अपने काम से छुट्टी नहीं लेते क्योंकि उनका कहना है कि अगर एक दिन भी छुट्टी करूंगा तो उस दिन के पैसे कट जांएगे, और उन पैसों पर मुझसे ज़्यादा मेरे बच्चों मेरे परिवार का हक है। पापा की एक ख़ास बात थी कि उन्होंने कभी भी अपना प्यार जताया नहीं। वो बहुत सख्त और साथ ही साथ बहुत ही नरम दिल थे। हम सब इस बात को अच्छी तरह से जानते थे इसलिए घर में कोई भी बात हो उन्हें नहीं बताते थे। मुझे इस बात का बहुत दुख होता है कि मेरे पापा अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी भी चैन से नहीं सोए। उन्हें इतनी मेहनत करते देख हम सबको लगता था कि बड़े होकर पापा को इतना आराम देंगे कि वो अपनी सारी तकलीफ भूल जांएगे। पर अफसोस हमें नहीं पता था कि पापा हमें इतनी जल्दी छोड़कर चले जांएगे। परिवार का ध्यान रखने के लिए, हम बहन–भाइयों को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए पापा बहुत मेहनत करने लगे थे। ढंग से खाना और सोना भी उनका नहीं हो पाता था। पर शरीर को तो आराम चाहिए ही न। और बस बहुत ज़्यादा काम करने की वजह से मेरे पापा की तबियत लगातार ख़राब रहने लगी। लेकिन फिर भी उन्होंने अपनी तरफ ध्यान नहीं दिया। मैं देखती थी कि अब तो ज़रा सी मेहनत करने पर ही उनकी सांस फूलने लग जाती थी। मम्मी ही ज़िद करके पापा को इलाज के लिए डॉक्टर के पास ले जाती थीं पर पापा पर तो न जाने क्या धुन सवार थी। वो दवाई भी समय पर नहीं ले पाते थे। मम्मी ने ज़रूर ज़िद कर–करके पापा का बहुत इलाज करवाया पर आराम जब शरीर को मिलेगा ही नहीं, जब दवाई समय पर ली ही नहीं जाएगी तो इलाज का भला फायदा हो सकता है क्या? और वही हुआ।

पापा की तबियत और बिगड़ती चली गई। मुझे याद है एक बार पापा मामाजी से मिलने गए वहां उनकी बहुत तबियत ख़राब हो गई। उस समय पापा को जैसे कुछ ऐहसास सा हो गया था। शायद इसीलिए उन्होंने मामाजी से कहा था कि अगर मैं बुधवार तक बच गया तो ठीक वरना नहीं बचूंगा। मामाजी ने मम्मी को ख़बर दी कि जीजाजी की तबियत बहुत बिगड़ रही है। मम्मी फौरन मामाजी के यहां पहुंची और मामाजी के साथ पापा को डॉक्टर के पास ले गईं। लेकिन इस बीच पापा की तबियत इतनी बिगड़ गई थी कि वो ढंग से सांस तक नहीं ले पा रहे थे। पता नहीं क्या सोच रहे थे पापा अस्पताल जाते समय क्योंकि अस्पताल जाते वक्त उन्होंने मुझे अपने पास बुलाकर कहा था कि बेटा ज़्यादा काम मत करना जितना हो सके उतना ही करना वरना कई बार ज़िंदगी हाथ से फिसल जाती है। उफ यह बात पापा ने मुझसे कहने से पहले खुद से क्यों नहीं कही। अगर

कही होती तो उनकी तबियत कभी ख़राब नहीं होती। पर नहीं नियति भी तो कोई चीज़ होती है। वह उदाहरण पहले देती है, सीख बाद में। जिसे समझना हो समझ जाए, न समझना हो तो खुद उदाहरण बनकर जान से जाए।

मैं और क्या कहूं? कुछ देर बाद अपनी सूजी आंखों के साथ मेरा मंझला भाई मेरे पास आया और उसने कुछ ऐसा बोला कि लगा मेरी भी सांस थम गई है, खून जम गया है। उसने वो कहा था जो मैं कभी भी नहीं सुनना चाहती थी। पर फिर भी उसने कह दिया और मैंने सुन भी लिया कि पापा अब नहीं रहे। उफ अपने पापा को इतना चाहने वाली मैं? मुझे कुछ हुआ क्यों नहीं? काश कि मेरी भी सांस रुक जाती। काश! मैं भी समय की सुई को उल्टा घुमा देती और दौड़कर जाकर पापा को बता देती कि अगर आपने अपना ध्यान नहीं रखा तो देखो क्या होगा? जिन्हें आप सबसे ज़्यादा प्यार करते हो आपके वो बच्चे दुनिया के सबसे दुखी और अकेले बच्चे बन जांएगे। पर ऐसा नहीं हुआ। और ऐसा कभी होता भी है क्या? इसलिए मेरे साथ कुछ भी नहीं हुआ। बस इतना हुआ कि मैं अवाक् सी देख रही थी कि भाई ये क्या बोल रहा है? फिर मैंने पूछा बता न पापा कैसे हैं? उसने फिर वही जवाब दिया। उस समय मेरी आंखों से जो आंसू निकले वो बंद होने का नाम नहीं ले रहे थे। मैं अस्पताल गई देखा मां रो रही थीं और मेरे प्यारे पापा, दुनिया के सबसे अच्छे मेरे पापा मेरे छोटे भाई की गोद में दम तोड़ चुके थे। काश! उनकी जगह मैं दम तोड़ चुकी होती। नहीं समझ आ रहा था कि क्या करूं? मैं बेहोश हो गई थी। जब होश आया तो वापिस तो कुछ भी नहीं लौटा। बस एक सांस थी जो बिना किसी फिक्र के जा भी रही थी आ भी रही थी। सांस को क्या मतलब कि मेरा तो सब कुछ खत्म हो चुका था। वो भी ख़त्म हो जाती तो कुछ ग़लत न होता। ख़ैर पापा को गए समय बीत गया है। और बीतते समय के साथ जान गई हूं कि वाकई अब वो चले गए हैं पर आज भी ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब मेरे पापा मेरे साथ मेरे ख़यालों में नहीं होते।

I LOVE YOU PAPA

Your face is a book, where men may read strange matters.

तुम्हारा चेहरा एक ऐसी किताब है जिसमें लोग नई–नई बातें पढ़ सकते हैं।

(Shakespeare)

मेरे सपनों का भारत

सोमैया रियाज़

बीए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

आज मुझे हिंदी की प्रोफेसर ने लेख लिखने के लिए कहा। मेरे मन में तब एक कठिनाई उत्पन्न हुई कि आख़िर मेरे लेख का शीर्षक क्या होना चाहिए? किस विषय पर लिखूं– नारीवाद, यथार्थवाद, संस्कृतिवाद, अस्तित्ववाद? इसी प्रकार के हज़ारों विषय वाद बनकर मेरे मस्तिष्क में घूम रहे थे पर आख़िर मैंने तय कर लिया कि मुझे किस विषय पर लिखना है। तभी पापा ने टीवी खोलकर न्यूज़ देखना शुरू किया। टीवी पर रवीश का प्रोग्राम आ रहा था, विषय था धर्म की राजनीति।

आख़िर मज़हब की राजनीति करता कौन है? और क्यों करता है? ऐसे ही सवालों के जवाब खोजते–खोजते मैं बेचैन सी हो गई। सवाल उठने लगे कि काश भारत और पाकिस्तान एक ही मुल्क होता। पर जैसा हम चाहते हैं, वैसा अक्सर होता कहां है? सच तो यह है कि धर्म की क्षुद्र राजनीति की वजह से हमारा अभिन्न अंग हमारा दुश्मन बनकर खड़ा है। और धर्म तो जीवन–व्यवहार का नाम है, नैतिकता और जीवन शैली का नाम है फिर कितने दुख की बात है कि धर्म के नाम पर इस देश का बंटवारा हो गया! दुख तो इस बात का है कि इतने पर भी राजनीति नहीं थमी है। अब भी देश के विकास के नाम पर धर्म के आधार पर वोट मांगे जाते हैं। हिंदू वोट, मुस्लिम वोट, ईसाई वोट! यानी हमारी धार्मिकता, जीवन–शैली असल में राजनीति का एक मोहरा है, जिसने हमें सिर्फ और सिर्फ एक वोट में तब्दील कर दिया है। सच कहूं तो मेरा बचपन बहुत अच्छा था उस समय मैंने जो धर्म समझा–जाना उसने मुझे लोगों से जुड़ना सिखाया, सबको अपना समझना सिखाया पर जैसे जैसे बड़ी होती गई यह बात मुझे समझ आती गई कि असल में धर्म का सही अर्थ लोगों को ठगना भर है। लोग जानते हैं तो बस धर्म के नाम पर लोगों को तोड़ना उन्हें मूर्ख बनाना। आज़ादी से पहले अपने ही लोगों को अपनों से अलग करने का काम अंग्रेज़ों ने किया था पर आज की विडंबना यह है कि अंग्रेज़ तो चले गए पर उनकी तर्ज पर अपने ही अपनों को लूट रहे हैं, मूर्ख बना रहे हैं। मज़हब तो जैसे अब किताबी चीज़ बनकर रह गया है। पर उसके नाम पर गुंडागर्दी और पाखंड को प्रचारित किया जा रहा है। लोग दूसरों को तो सीख देते हैं पर खुद के बारे में नहीं सोचते। लोग सोचते हैं कि दूसरे व्यक्ति को सच्चरित्र और अच्छा होना चाहिए पर यही नहीं सोचते कि खुद उन्हें भी अच्छा होना चाहिए। क्या कहूं मुझे लगता है जैसे धर्म की अच्छी बातें केवल दूसरों को उपदेश देने के लिए हैं, उनपर खुद अमल करने के लिए नहीं हैं। कम से कम आज तो यही स्थिति है। मैं अपने देश से बहुत प्यार करती हूं पर जब अपने सपनों के भारत के बारे में सोच रही थी तो मुझ समझ में आ रहा था कि मेरे सपनों का भारत तब तक नहीं बन सकता जब तक कि देश में ऐसे अवसरवादी लोगों के हाथ में देश का भविष्य रहेगा जो असल में धर्म के नाम पर राजनीति करते हैं और देश को तोड़ते हैं। मुझे लग रहा था कि असल में यह मेरी और मेरे जैसे अनगिनत युवाओं की ज़िम्मेदारी है कि वो ऐसे सभी तथाकथित देशभक्त राजनेताओं का असली चेहरा उजागर करें और बताएं कि देशभक्ति का अर्थ होता क्या है? और मज़हब तोड़ने की चीज़

नहीं बल्कि देश ही नहीं विश्व को जोड़ने का भाव है। मैं जानती हूं कि जिस दिन मैं और मेरे जैसे अनगिनत युवा यह बात समझ जांएगे उसी दिन से मेरे सपनों के भारत बनने की शुरुआत हो जाएगी।

दहेज एक सामाजिक ज़रूरत है!

मिस्बाह

बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

आजकल जलने का चलन है

दहेज ही दुल्हन है

शायद आपकी बेटी हमारे टूटे पलंग पर सो न पाए

अच्छा होगा एक डबलबेड आ जाए

हम दहेज के ख़िलाफ हैं

गर्मी में आपकी बेटी को पसीना आएगा

सच हमसे देखा नहीं जाऐगा

मन में ग़म मत पालिये

एक ऐसी और फ्रिज दे डालिये

हम दहेज के ख़िलाफ हैं

जहां घर और ऑफिस में दूरी है

वहां बाईक छोड़िये कार होना ज़रूरी है

सच हम दहेज के ख़िलाफ

तलाश अभी जारी है

मनोरमा गौतम

सहायक प्रवक्ता हिंदी

क्या कहूं मैं और क्या कहूं

क्या मैं कोई वस्तु हूं या बेजुबान पशु

क्या मेरा कोई वजूद नहीं

जब मैं खोजती हूं खुद को अपने ही घर में

अपने ही लोगों के बीच

पता चलता है कहीं नहीं मैं

कुछ नहीं मैं

एक अदृश्य की तरह बिखरी पड़ी हूं पूरे घर में

फिर चाहे किचिन हो या बेडरूम

ड्रांइगरूम या बाथरूम

औरत होने के नाते बस यही है मेरी हैसियत

जिसे कोई नहीं जानता

कोई नहीं पहचानता

स्वयं के अस्तित्व को पाने की चाह लिए

भटक रही हूं मैं किसी शून्य में

किंतु खत्म ही नहीं होती मेरी ये तलाश

सदियों से ऐसे ही तलाश रही हूं मैं स्वयं को

मेरी तलाश अभी भी जारी है।

एक कविता हर मां के नाम

भूमिका खुराना

बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

घुटनों से रेंगते–रेंगते कब पैरों पर खड़ी हुई

तेरी ममता की छांव में जाने कब बड़ी हुई

काला टीका दूध मलाई

आज भी सबकुछ वैसा है

मैं ही मैं हूं हर जगह

प्यार ये तेरा कैसा है

सीधी–सादी भोली भाली

मैं ही सबसे अच्छी हूं

कितनी भी बड़ी हो जाउं मां मैं आज भी तेरी बच्ची हूं।

लिखना है मुझे

चारुल

बीए प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

लिखना है मुझे, लिखना है मुझे

लिखनी है मुझे अपने मन की बात

लिखने हैं मुझे कुछ अच्छे विचार

लिखना चाहती हूं कुछ ऐसा

कि क़लम कर दे बयां सभी कुछ

कहना न पड़े एक शब्द भी

और समझ जाएं मुझे सभी

लिखने जब बैठती हूं तो

मन में आते हैं हज़ारों विचार

अगर अच्छा न लिख पाई

तो बनेगा मेरा मज़ाक

फिर मेरी क़लम बोल उठी

एक बार लिखो तो सही

कहीं कुछ अक्षर ही मिल जांए

फिर इतनी शंका क्यों

लिखना मेरी आदत है

लिखना मेरा शौक है

क्योंकि कलम मेरी तन्हाई में मेरी सबसे अच्छी दोस्त है

लिखना चाहती हूं तब तक जब तक मेरी सांस है

कलम मेरी ऐसी दोस्त है जो हमेशा मेरे साथ है।

A Man of Character will make himself worthy of any position he is given.

एक चरित्रवान व्यक्ति किसी भी पद पर कार्य करें, वह उसके योग्य सिद्ध होगा।

महात्मा गांधी

छोटी सी ज़िंदगी की इतनी सी कहानी है

इंसीया

बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

आवारा हवाओं में उड़ती

एक आवारा बादल हूं मैं

खुद चैन हूं तो खुद दिल का क़रार हूं मैं

छोटी सी ज़िंदगी की बस इतनी कहानी है

मिल जाए कोई मंज़र बस यही रवानी है

छोटी सी ज़िंदगी की बस यही कहानी है

रात के तन्हा लम्हों में कोई आकर मुझसे कहती है

क्यों इस बेचैन दिल में हमेशा हलचल रहती है

छोटी सी ज़िंदगी की बस इतनी कहानी है

थोड़े से हम खुद बिगड़े थे, थोड़ी दोस्तों की मेहरबानी है

चलो सोचें तो सही कि आज हमने कुछ लिखने की कोशिश की है

छोटी सी ज़िंदगी में मोहब्बत और सिर्फ मोहब्बत की एक कहानी है।

ज़िंदगी की रेस

मोनिका

बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

कितनी अजीब है ये दास्तां ज़िंदगी की

जन्म से शुरू और मृत्यु पर ख़त्म

हर कोई अपने आप में ही खोया है

बस कुछ पाने की तलाश में

किसी को चाहिए रुपया–पैसा,

किसी को चाहिए ढेरों खुशियां

हर किसी को चाहिए कुछ न कुछ

पर करना नहीं चाहता है कोई भी कुछ

कितनी अजीब है ये दास्तां ज़िंदगी की

कितने अलग हैं ये रुख ज़िंदगी के

बचपन में कराती है ये मौज–मस्ती

जवानी में कराती है आभास ज़िम्मेदारी का

जब बात आई बुढ़ापे की तो पीछे हट जाती है ये ज़िंदगी

बढ़ाती है ये परेशानी, दे जाती है ग़म

कितनी अजीब है ये दास्ता ज़िंदगी की

खेल है बड़ा निराला इस ज़िंदगी का

पिटारा है ये ज़िंदगी

भंडार है ये चुनौतियों की

कभी दुख तो कभी सुख

कभी रोना कभी हंसना

कभी अपने लिए जीना

कभी दूसरों के लिए मरना

धीरे धीरे सब सिखा जाती है ये ज़िंदगी

कितनी अजीब है दास्तां ज़िंदगी की

देती है अवसर जीने का ये ज़िंदगी

बांट लो खुशियों का अंबार

बहुत ही अनमोल है ये ज़िंदगी

करो इसका सम्मान और जीत जाओ ये ज़िंदगी

कितनी अजीब है ये दास्तां ज़िंदगी की।

गुरु का महत्व

हुमा परवीन

बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

चलते चलते एक दिन हम पहुंच गए एक अजब बाज़ार में

हम हो गए हैरान, बिक रहे थे रिश्ते खुले आम बाज़ार में

कांपते होठों से मैंने कहा क्या भाव है

भाई इन रिश्तों का

दुकानदार बोला– कौन सा लोगे?

बेटे का या बाप का, बहन का या भाई का

कौन सा लोगे इंसान का या हैवान का

प्रेम का या विश्वास का

मुझे चुप देख दुकानदार बोला – बहनजी कुछ तो बोलो

मैंने हिचकिचाते हुए कहा– गुरु का रिश्ता मिलेगा क्या?

दुकानदार की जैसे हो गई बोलती बंद

बोला– संसार इसी रिश्ते पर ही तो टिका है

माफ करना बहनजी यह रिश्ता बिकता नहीं है

क्योंकि अनमोल चीज़ों का मोल लगता नहीं है

जिस दिन बहनजी यह रिश्ता भी बिक जाएगा

उस दिन यह संसार ही उजड़ जाएगा।

रिश्तों का सफर

बीकॉम तृतीय वर्ष

जिस आंगन में पली–बढ़ी मैं

घर घर जिसमें खेली थी

जाने क्यों फिर उस आंगन से

आज विदा लेनी थी

घर छूटा तो लगा कि सब कुछ छूट गया है

लगा कि हमसे आज खुदा भी रूठ गया है

संग बातों की गठरी थी और था रिश्तों का प्यार

लगा कि इसको संभाल लूंगी संग अपने नए परिवार

नए घर में भी रौनक थी बड़ी सुहानी

लगा कि जैसे चांद भी कर रहा हो मनमानी

सोचा था कि नए घर रहूंगी बनकर परी रानी

पर बन न सकी क्योंकि मैं थी बहुरानी

अपने नए परिवार की ख़ातिर मैंने किए बलिदान कई

उनकी खुशी के लिए मैंने अपना नाम भी बदलवाया

तब भी जीवन के हर मोड़ पर मैंने खुद को तन्हा पाया

भीड़ में सबके तन्हा हूं मैं फिर भी है संकल्प यही

मुझको आगे बढ़ना है गढ़नी है पहचान नई।

खुशी

फरहा सलीम

प्रथम वर्ष

ऐ खुशी, ऐ खुशी

कभी रूठना नहीं हमसे

रहना सदा साथ बनकर हमारी

भरना संसार के सभी रंग ज़िंदगी में हमारी

हर पल में घुल जाना ऐ खुशी तुम

दूर हो ना कभी भी ज़िंदगी से हमारी।

ऐ खुशी, ऐ खुशी तुम्हें ये क़सम है हमारी।

बदलाव

सोनिया

बीए प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

बदले हम, बदले तुम

शायद यही है बदलाव का आग़ाज़

बदल गई वो जलवायु भी

जिसकी साफ हवा में

लेते थे हम सांस।

बदल गए अब सामाजिक मूल्य भी

पहले देते थे इंसान को मान

अब देते हैं पैसे को सम्मान

बदले हम, बदले तुम

बदल गए अब आंदोलन करने के तरीके भी

पहले करते थे सत्याग्रह और मार्च

अब करते हैं सत्याग्रह और अवार्ड वापसी के द्वारा अनाचार

बदल गए अब सांप्रदायिक दंगों के तरीके भी

अब इसमें शामिल हो गया है खान–पान का तरीका भी

बदले हम, बदले तुम

शायद यही है बदलाव का आग़ाज़

बदल गई अब राजनीति की हवा भी

और पहुंच गई है शिक्षा के गलियारों तक

बदलाव के इस माहौल में अब यूं लगता है कि

रुख़ बदलना होगा इस दूषित बदलाव का

और देनी होगी दिशा भटकी हुई मनुष्यता को।

यूं ही नहीं कहती मैं

आरती वर्मा

बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

यूं ही नहीं कहती मैं

कि अब मुझे आज़माना छोड़ दे।

हालातों को बातों से छिपाना छोड़ दे।

लोग क्या कहेंगे ये सोचना छोड़ दे।

तू बस अब खुद से घुटना छोड़ दे।

बोल तू तेरा विरोध ज़रूर होगा।

लड़ तू तेरा विरोध ज़रूर होगा।

तू कोशिश तो कर कभी न कभी

तेरा ज़िक्र तो ज़रूर होगा।

बंदिशों में यूं पली बड़ी हुई ऐसे

पंछी से उसके पर छीन लिए गए हों जैसे

तकलीफों से यूं जूझी ऐसे

कोई साथ खड़ा न हो जैसे

यूं ही नहीं कहते कि लड़की पानी होती है

ये तो कभी मां, कभी बहन कभी जननी होती है।

जीतने वाला बनाम हारने वाला

जूली

बीए प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

जीतने वाले के पास हमेशा कोई न कोई काम होता है

हारने वाले के पास हमेशा कोई न कोई बहाना

जीतने वाले के पास समाधान होता है

हारने वाले के पास कोई न कोई समस्या

जीतने वाले के पास जीत के सपने होते हैं

हारने वाले के पास खोखले ख़्वाब

जीतने वाला आने वाले कल को देखता है

हारने वाले बीते कल को

जीतने वाले अलग ढंग से काम करते हैं

हारने वाले कोई काम नहीं ही नहीं करते हैं।

रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं कायल

जो आंख ही से न टपका वो लहू क्या है।

गालिब

अनिरूद्ध कुमार सुधांसु

1

वाल्मीकि का आदर्श छोड

राम से नाता तोड़

क्या कबीर बन पायेगा

नागार्जुन सा बेवाक हो

क्या सत्ता को धूल चटायेगा

धूमिल बन क्या...

संसद के गलियारों में

क्या लोकतंत्र के बिगुल बजायेगा

रघुवीर सहाय सा लोगों को

अपनी कविता की पंक्ति में घुसायेगा

या छोड ए टी एम की लाइन में

आगे बढ़ जायेगा...

हे आज के लेखक

कुछ तो सोच...

देख मैंने शब्द दिये थे

तो गोबर में आई थी क्रान्ति

तो तू क्यूं मौन है

जब तेरा भारत डिजिटली ओन है

हुंकार भर...

एक बार फिर समय है

सोच मत...

गली गली में गोबर है

जा उनमें विचार भर

हे आज के लेखक

क्षय का भय छोड

केदार सा किसान बन...

लिख दे निराला सा

अपराजेय समर

बुढी कांपती हड्डियों में जान भर

आवाज बन...

हे आज के लेखक...

गजलपरस्ती का दौर नहीं ये

ये दौर हुकमरानों का है

छोड तू रीत और प्रीत

घायल है जनता

तू उसका गीत बन

फ़ैज की उन पंक्तियों का मनमीत बन

जिनमें लिखी थी

और भी गम है मुहब्बत के सिवा

हे आज के लेखक

कोस मत...

कोसते कमजोर हैं...

तू तो ताजी भौर है

देख इसके बाद तो इजोर ही इजोर है

हे आज के लेखक...

2

मैं तेरी आस...

पर घास उगाए बैठा हूं

तू आ और काट ले

क्योंकि तेरी हरियाली काटने की

आदत है और

मुझे उगाने की

कुछ मुझे मेरी इस आदत के लिए

कामचोर, आलसी कहते हैं...

कुछ ना कहकर भी हमसफर रहते हैं

क्योंकि वो जानते हैं सच

कि

मेरी ज़िन्दगी

किसी के इंतजार में

डगी है

वो काट कर चला गया...

फिर से उगने के लिए छोड़ कर...

ले काटले जो मैंने उगाया है क्योंकि

तू सत्ताधारी है

और मेरी मेहनत तेरी बेगारी है।

माँ

डॉ. दीपा

1

मन छटपटाता है तेरा स्नेह पाने को,

मन छटपटाता है तेरी गोद में स्नेह पाने को,

मन छटपटाता है तेरे आलिंगन में सिमट जाने को,

मन छटपटाता है तेरा आशीष पाने को।

माँ ये दुनिया बड़ी जालिम है,

छीने जाती है मुझसे मेरी मासूमियत।

छीने जाती है मुझसे मेरी मुस्कुराहट,

छीने जाती है मुझसे ही मुझको,

छीने जाती है मेरी नींदे मेरे सपनों को।

मैं रोना चाहती हूँ दामन में तेरे लिपटकर,

मैं खोना चाहती हूँ बाहों में तेरी सिमटकर।

मैं मिलना चाहती हूँ खुद से ही तुझसे मिलकर,

मैं खोती जाती हूँ आ मुझको बचा ले तू माँ,

कहीं ऐसा न हो कि मुझको ये जमाना खा जाए,

तेरे चेहरे में अपना चेहरा मैं खोजना चाहती हूँ।

2

ए निराशा जान ले

मन में उलझन–सी हर पल है,

जीवन में आशा पल–पल है।

सुलझेगी गुत्थी हर उलझन की,

हमको ये आशा पल–पल है।

आएगी निराशा जब भी कभी,

हम उसको ये बतलाएंगे।

तुम सोचोगी हम हारेंगे,

हम जीतके तुम्हे दिखला देंगे।

तू और तमाशा मत करना,

ना पास कभी आना मेरे।

हर बार मिलेगी मात तुम्हे,

हम जीत के यूं दिखला देंगे।

जीवन के थपेड़ों ने हमको,

हर बार निपटना सिखलाया।

तुम आओगी तो पाओगी,

ना हमसे फिर टकराओगी।

हर बार मिलेगी मात तुम्हे,

हर बार ही मुँह की खाओगी।

जीवन में तमाशे बहुत हुए,

ना करना और तमाशे तुम।

जीवन के हरेक तमाशे ने,

हमको है सिखाया काफी कुछ।

इसलिए जीत न पाओगी,

हरबार ही मुँह की खाओगी।

तुम तोड़ोगी हम टूटे न,

हो गए ढींठ अब हम भी बड़े।

अच्छा होगा तुम आओ ना,

और मुँह की हमसे खाओ ना।

अगर तुम फिर भी आओगी,

इसबार भी मुँह की खाओगी।

तू किसलिए उदास है?

तू खुद की खोज में निकल, तू किसलिए हताश है।

तू चल तेरे वजुद की, समय को भी तलाश है।

जो तुझसे लिपटी बेडियां, समझना उनको वस्त्र तू।

ये बेड़िया पिघलाकर, बना ले इनको शस्त्र तू।

तू खुद की खोज में निकल, तू किसलिए हताश है?

तू चल तेरे वजुद की, समय को भी तलाश है।

चरित्र जब पवित्र है, तो क्यों है ये दशा तेरी?

ये पापियों को हक नहीं की ले वों परिक्षा तेरी।

ध्वज उडा के चुनर बना, गगन भी कंपकपाएगा,

अगर तेरी चुनर उड़ी तो एक भूकम्प आएगा।

तू खुद की खोज में निकल, तू किसलिए हताश है।

तू चल तेरे वजुद की समय को भी तलाश है।

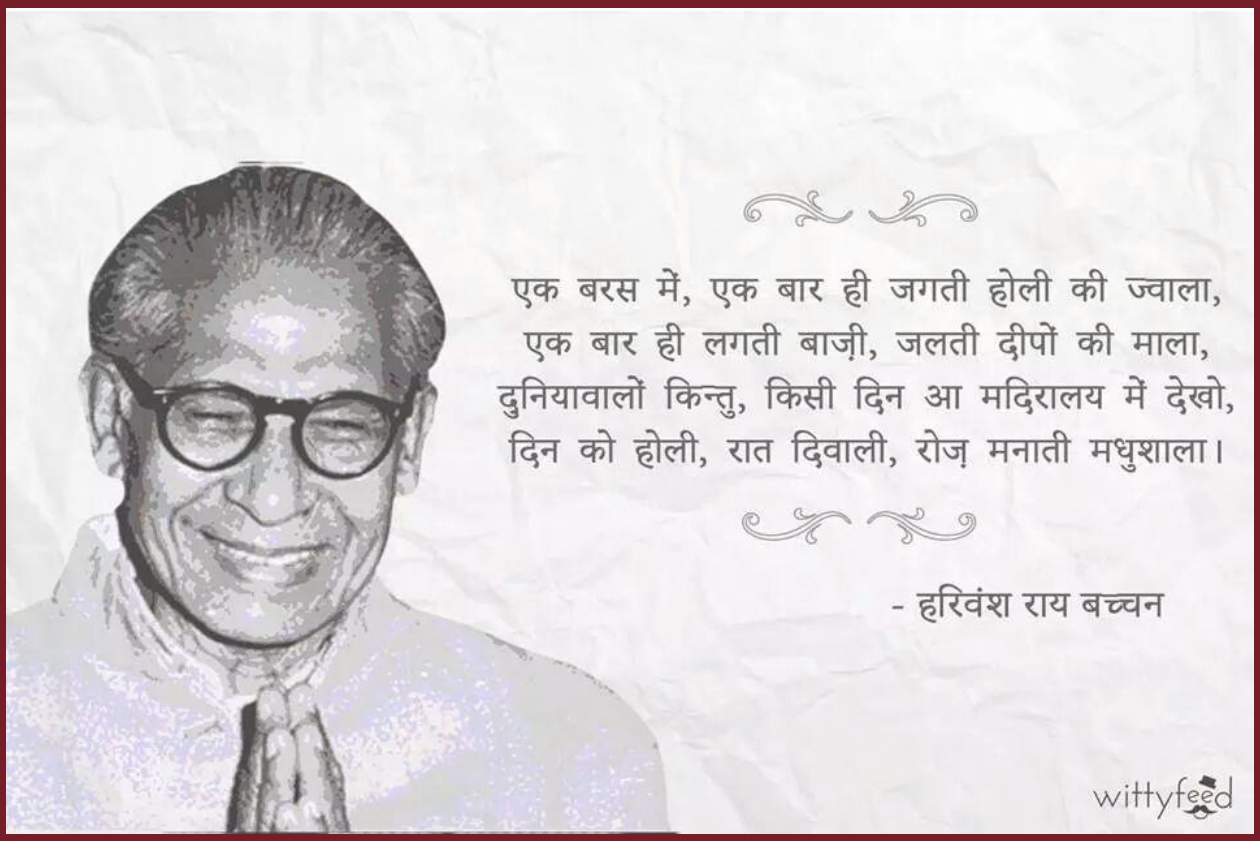

Me

Whenever I think about me,

I always think that where I am.

Am I going to stand on my feet

or on my knee.

Whenever I think that what will I do

in my future.

Will I do good with my life

or will I just live with the nature.

That's what I always think about

If I would become a good person

and be able to see the successful

me.

Sandhya Jha.

B.A. Prog.

1st Year.

THE EXMAINATIONS : BEGINNING OR END

Our examination system that lays a misplaced emphasis on achievement rather

than developing the true potential of a student, leaves a lot to be done. Our examination practices are far from being ideal. Hundreds of teachers are setting question papers – and a percentage of them must be doing a hurried job. Answer books are also examined in a hurry by a certain percentage of examiners. Who is to blame, students, teachers or the system ?

Of course, examinations are not for their own sake. Professor J.N. Kapoor rightly enumerates the purpose of examinations ; 9i0 To

evaluate the performance of the students and to form a judgement about their academic achievements; (ii) to inform the students about their progress so that they adjust their learning programme accordingly; (iii) to inform the teachers of the progress so that they can adjust their teaching programmes accordingly; (iv) to provide motivation for

hard and continuous work by the students (v) to provide motivation for continuous improvement of teaching by teachers;(vi) to provide useful and reliable information to prospective employers about the potentialities of the candidates as revealed by the examinations.

In fact, until the middle of 19th Century, the oral tradition dominated the evaluation system in educational institutions. It was Horace Mann who first advocated the superiority of written exams over the oral, and the process was accepted by and by. With the development of famous Simon Binett I Q test by the turn of 20th century began a number of tests to assess academic attainments and to investigate mental , emotional and social conditions that affect educational outputs.

A feeling has been gaining ground since long that the examination system appears to be wrongly positioned as part of the educations delivery system, it has become an end in itself. It is our misfortune that the education system has got transformed into the examination system.

The issue of examination reforms has always engaged the attention of experts. Prf. Raus Ahmed of Delhi University opines comprehensively and perfectly : " A new or different approach to examinations is urgently

needed. A different, academically sound and quite practicable approach needs to be adopted".

Back in 1902, the Indian University Commission called exams, " the greatest evil from which university education in India suffers". The University Education Commission (1948-49) headed by Dr. S. Radha Krishanan, stressed the need for examination reform. Later, the Kothari Commission (1964 – 66) and the New Education Policy (1986 – 92) emphasised the need for such reforms. Dr. D.S. Kothari speaking at a seminar described the examinations as an "irrationality " in the existing Education system. He held the view that the students' knowledge cannot be judged by marks alone. The special fault of the examination system is not that it is erratic, but that it purports to be accurate.

Experience suggests that it is not possible to make examinations absolutely fair and accurate. Methods of examination have a great effect on methods of teaching and on students' method of working. Each system will develop particular intellectual qualities in those who Are subjected to it.

In our country the student - teacher relation is a one way traffic – the student performs and the teacher judges. Seldom is there any thought that the students and teachers are somehow partners in the teaching – learning process. The traditional system of education ends with the declaration of examination results. In fact, this is the beginning of the educational process. An in – depth analysis of the variance in performance should be followed by a game plan for improvement. The marking of answer sheets depends on the sincerity and experience of the teacher. There is no chance at all of achieving uniformity in

marking. Hence, it is difficult o dispense with the prevailing system of pass-fail mode of evaluation.

An independent autonomous body like the US Education Testing Services (ATS), which conducts the preliminary scholastic aptitude test, The Scholastic

Aptitude Test (SAT), the achievement tests in the field of students' choice, and the graduate records examination could be set up. Apart from offering a uniform

Testing system for all students, a score received from such institutions could be used to supplement the final exam results. The boards and other bodies must by law be made more accountable like SAT in the US, answer sheets must be readily available to the students.

Many student – oriented free universities and experimental colleges of the US have experimented with joint evaluation. The ideal is to encourage the student and the teacher to jointly evaluate the students' work and teacher's contribution to it. The point is that a student ought to have a way of knowing what his skills and weaknesses are.

Accountability seems to have escaped all, except the helpless student, who remains an unfortunate victim of a system that breeds confusion. After all, marks matter most.

K.S. Maan

Infant Heart

Oh, people of the world

Let us blossom

Don't kill in the womb

we have to see the beautiful

world, females are the wealth and the

the Pride of the nation

Girls are as good as boys

Do not kill us,

Female foeticide is

a crime against women

think it over.

It should be banned

at all cost

No abortions

No female foeticide.

Save the beautiful

creation of God

Oh, people of the world

Awake now

And pull all your efforts

To save girl child

otherwise

you will add

one more

in the list of

'Endangered species'.

- Mahima Sharma, B.A. Prog.

Poem of Life

Life is an opportunity, benefit from it.

Life is beauty, admire it.

Life is a dream, realize it.

Life is a challenge, meet it.

Life is a duty, complete it.

Life is a game, play it.

Life is a promise, fulfil it.

Life is a sorrow, overcome it.

Life is a song, sing it.

Life is a struggle, accept it.

Life is a tragedy, comfort it.

Life is a luck, make it.

Life is life, fight it.

A girl child is God's gift

Girls are treasure to ones' family.

Girls give moral strength to the family.

Girls are the future of every nation

Girls need a little amount of care

a hand full of warmth,

a heart full of love,

education to girls,

will lift the family,

Let the girls also be

smiling and happy.

Priyanka Garg, B.A. Prog.

Childhood

I missed my childhood,

where did it go.

I have full freedom

of doing

whatever I do.

The precious, golden, adorable

time

where did it go.

I missed my childhood

where did it go.

- Farha Saleem, B.A. Programme, 1st year.

Mom

God loves you and I do too

I'd love to spend sometime with you.

So take a look inside the sack

and you will find a special snack.

As we share the snack today

Love you Mom.

- Tripti Sharma, B.A. Prog, 1st year.

Father's tears

He was always my pillar when I knew

I'd fall,

always my anchor, strong and tall

His hard face changes only for me

His softer side, so careless and free

He knows my dreams are too big

for this place.

His little girl is leaving, ready to begin

her race

He knows I'll be thinking of him

Wherever I go

I know I am ready to do this on my own

But still I cry and he holds me

tight

He tries to be strong, not a tear in

Sight

I'm ready to touch the stars in the

Sky

He's ready to watch his princess fly

It's time to let go, sure of a path to

take

But now I know, even pillars can break

for when I drive away, trying to stifle

my cries

All I could see were tears in my

Father's eyes.

- Gunjan walia, B.A. Prog, 1st year

Prose

At dark

It was raining very heavily. I was walking on the road. It was getting dark. There was no to be seen. There was no street light. Suddenly, some unknown voice came and I was gripped with fear. Therefore, I was searching some one who can help me. After few minutes, I saw something. There was light of candle, I reached there for help and I found. It is small sweet lane where two old couples lived and there was nobody with them so I stayed there at that night. When the morning came, I returned home and felt very calm.

- Laxmi Mathur, B.A.Prog

In the rain

It was raining very heavily and I was soaked completely in this rain. I was walking on the road and it was getting dark. There was no street light as well and suddenly one dog came and started barking. I was scared to see the dog. Out of fear, I closed my eyes to see the dog. After that my old and loving friend came and hit the dog. The dog ran on the pavement to street. Then my friend came to me and took my hand in their hand and stood under a shop. When the rain stopped he took me at his home and made coffee for

me. After getting drowned in rain, I started sneezing (one, two, three). Then he gave me towel to wipe myself. He also cooked maggie for me because he didn't know how to make any other item. After that we ate and drank. Finally, he dropped me at my house. It was nice experience for me.

- Karishma Sharma, 1st year

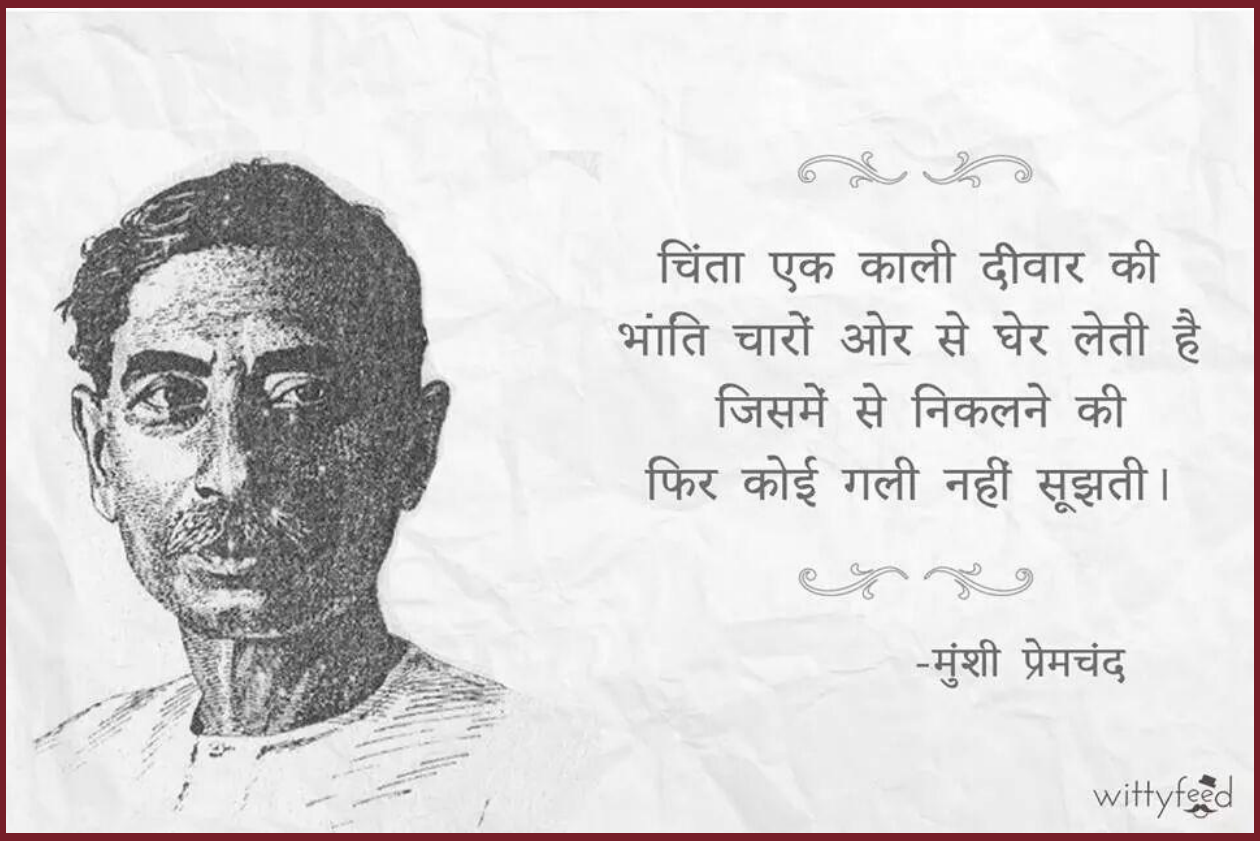

"Globalization and Teaching Technical English"

English is a global language and its role has rapidly increased in the era of globalization. The use of information technology is its most important factor and largely, the applied language is English. That is to say, English language and globalization are inseparable; rather the latter is dependent on the former. Whether it is interaction for marketing and business purposes, social, political, educational, technological exchanges, the connective thread is English. As such, it will not be an exaggeration to express that the concept of global village would not be realized 'without English'. Simultaneously, it has created a situation in which drastic changes are required both in teaching - learning methodology as well as the corpus of the language curriculum.

The term "Technical English" is often used as the synonym of communicative English, whether it is verbal or written. Out of the four important functions - informative, directive, expressive and social, the last one is probably the most crucial function. We use language to exchange information, to get things done, to express pleasure and displeasure, agreement and disagreement. But if we do these things ignoring the social aspect of interaction, life will become difficult for us. There are acceptable and unacceptable, polite and impolite, constructive and disruptive ways of exchanging information, of asking people to do things for us, and of conveying our dislikes of and disagreement with people. Every time we use language, we are likely to run the risk of causing damage to our interpersonal relationship, therefore, we have to constantly make choices depending on our interpersonal goals.

The Technical English courses take into account only those linguistic components of English language which have a direct bearing upon the functional needs of the learner. How to understand and to be understood clearly through speech and writing within the accepted norms and forms of English in various kinds of transactions is the core concern in the teaching

and learning of Technical English. The learner's linguistic competence in the performance of all the four language skills as listening, speaking, reading and writing is kept in mind as the main or ultimate objective.

As long as the classes advance from secondary to higher secondary and then to graduation, more and more emphasis is laid on literary competence than that of communicative competence. Teachers of English deliver scholarly discourses on poetry, drama, fiction etc. They talk about story and plot, humour and pathos, plot construction and characterization, summaries and central ideas and so on. But sadly, they hardly draw the student's attention to how characters in a play or a novel, for instance interact interpersonally and perform various functions such as introducing, complementing, inviting, agreeing and disagreeing and so on.

Thus a very rich resource of teaching Technical English is left unexploited. Some teachers think that Technical English cannot be taught through literature. This is a misconception. Literature uses language in rich contexts which make the teaching of Technical English all the more easy. An imaginative and resourceful teacher will draw on recent books on technical, communicative and discourse grammar and apply the insights codified there to real life, fictional and dramatic interaction. This will also help him to overcome the misunderstanding that the teaching of language and that of literature cannot go hand in hand.

Dr. Nivedita Sinha
Mata Sundri College Centre
NCWEB

My knowledge and interest

I like to read newspapers but not just for information, incident etc. About my knowledge, my mother always says, “I think you should become a doctor” because I like to collect the news about diseases like cancer, high blood pressure.

Memories of my school days

Someone says that the school life is the best life. I remember one incident very much. When my English teacher told us about the tour of Shimla, I was very excited. When she collected the name of students for Shimla trip, my name was not on the list. On that day, I became very sad but did not give up.

- Nikita

The girl child in India

India is the country of 70% young minds. We are moving on a track of developed countries but here I want to ask one question from all of us that, ' have we developed mentally too?' Simply, the answer is no, not yet. Still the condition of girls and boys are like two eyes of a society. In the absence of anyone the balance in society will be affected. Here, I want to quote the

beautiful lines of Dr. Ambedkar, “I measure the progress of a community by the degree of progress which women have achieved.” By these lines, he wants to say that the progress of girls shows the progress of our country.

Girls are missing from their mother's womb and father's home. These days, the issue of girl foeticide is a burning issue in India. This is the mentality of our people that boys will raise their head up.

The situation of women in our country is not acceptable. They are still facing so many problems like dowry, domestic violence, female foeticide, human trafficking etc. Still they are fighting for their place in society.

Jawaharlal Nehru said, “if you teach a man you will teach an individual but if you teach a girl you will teach the whole family.”

The government of India has taken so many steps in favour of women like 'Ladli yojna', 'Mid-day meal programme', 'Sukanya Yojna', 'Beti Bachao, Beti Padhao', but still the condition is not appreciable.

Our country is developing but our mentality is not improving. Mentality is still backward. At last, I want to say that if you want a change, change yourself first mentally and socially. Then the situation will be improved and we will really develop one day.

- Monica Bisht, B.A. Prog, 1st year

The best memories in my life

There are so many memories that bring back smiles and tears. I'll share the best moments of my life spent at my favourite place in this world 'My

school'. I don't know about my future but wherever I go, will carry these moments with me.

School years are the best years of life. It's not so because it's carefree time in our life but because we have the greatest company by our side – our school friends. You laugh with them, share your first crush, do stupid things together and have a special bond which lasts for lifetime. So, there are some reasons why your school friends are your friends for life, like watching movies together, listening several types of music, sharing lunch boxes and share a laugh about those good old times. When friends are there, we always feel comfortable. Whenever I meet my group buddies they do not have to make any efforts to have a good time. They make jokes about each other. This is the best part of having some good friends because friends are always with us and they also give a good company, and these are some special moments of my life I can never ever forget.

- Monika Sharma, B.A. 1st year.

A nightmare

It was raining very heavily. And I was soaked completely in this rain and I was walking on the road. It was getting dark, there was no street light as well. Suddenly, I saw a yellow light coming towards me but the weird thing was, there is actually no origin from where the light coming is. Then I felt a paranormal spirit and it was really weird and I started walking very fast and I felt the spirit was following back me. And then I stopped. I decided to face the spirit and when I moved back I heard a voice - Help! Help! Help me but because of no streets light I was not actually able to see anyone. The level of darkness and paranormal activities was at its high that time. I started running, running as fast as much I can but the voice is still following me. I was not able to see the ways the road actually and may be my leg got stuck in something and I fell down and suddenly I opened my eyes and found myself on my bed.

Its a dream. Let me correct, it's a nightmare actually which I'll never ever forget.

- Bhumika, B.A.- 1st

FANTASY

It was raining very heavily and I was soaked completely in this rain. I was walking on the road and it was getting dark where there was no street light as well. Suddenly, I saw large beam of light coming from the corner of a street when I went close to the light it disappeared. I moved ahead on my

way then a man was coming behind me he followed my footsteps. I was little bit frightened and afraid too. I was first hoping the way end. I increased the speed of my footsteps as fast as I could. My mind went blackout due to fright. I was just thinking somehow to reach home soon. When I came close to my home, I noticed that the man lived in my neighbourhood. I took a deep breath of relaxation and entered my home.

- Monika Bisht

B.A.(P) 1st year

Roll No. DS/01/2016

Talwin Town

It was raining badly and I was fully soaked in the rain. I was walking on the road and it was getting dark there was no street light as well. Suddenly, I realised that a big castle appeared on the left side on the road which seemed to be appearing through the mirror and when I touched the mirror, I entered in the beautiful place called Talwin Town known for its magic and beautiful people and their talents. I was unknown to them and from a different world I was shocked to see the way they were dressed up, they seemed to be our 21st century Lady GAGA with huge black smoky eye and bright lips which was to me quite scary. Then slowly, I moved to famous church where the big fat wedding was happening, the groom was wearing a huge hat which is not suitable for a wedding day. He seemed to be very inept person. Suddenly, an old man came towards me and asked about my name and address. My tongue stuck I couldn't be able to speak, he kept looking at me with his big eye which was not even blinking, which made me

more nervous, scared. Then he told me that if I would not speak to him he will send me to a place where I would be in huge trouble. After I heard this, I was scared and told the whole story how I came to Talwin Town and where I belonged to. They showed me great gesture and gave full love to me then the whole town brought me the mirror and they spoke some words and I came to my own place, where I originally belonged to. I remember that place always because I know the spell to go again there.

- Mahima Sharma

DS/17/16

Horror story of a spirit

It was raining very heavily and I was soaked completely in the rain. I was walking on the road and it was getting dark there was no street light as well. Suddenly, my leg stuck in mud. It was very dirty. Then I got afraid. A confusion ran in my mind that how I will reach at home. Because there is darkness all over. Suddenly, I saw my friend Jasika. She said- Hi Priya. I caught her hand and walked. Then I saw after some time that she was not my friend she was a spirit whom wore white clothes and took a candle. Her face was covered with blood. It was very horrible for me. I was scared and yelled loudly and left her hand.

I ran fast without looking back. I saw again that spirit in front of me. Actually she climbed on the tree with the help of a rope. So, I closed my eyes. And I ran fast. She followed me. When I reached at my home, I told Oh my God that was unexpected for me. Then I felt relaxed. And I told this story with my curiosity. That was my first experience of spirit.

- Priya ,BA Programme, 1st year

A Lady

It was raining very heavily and I was soaked completely. I was walking on the road and it was getting dark. There was no street light as well . Suddenly, I heard strange voices that voices frightened me and I also saw a woman wearing white saree, with lose & long hair, red lipstick. I saw that she was continously watching me and coming towards me. With her each step towards me there was thunder and lightening in sky and that strange voices are becoming more dangerous. Slowly, that lady kept coming close to me and I was going backward. For one time, She came close to me and my breath Stopped. She was looking in my eyes with a smile, actually dangerous smile. I thought I would die in few seconds. But suddenly, I listened some sound, laughs and three- four persons laughing and I saw they were my friends and I understood they were trying to scare me for fun. I got relax and thankful that it was not true.

- Vaani

Roll no. 07

A Baby Girl

Once I was going to my friend’s home. It was raining very heavily and I was soaked completely in the rain. It’s 9’o clock at night in winter. I was going alone. I was shivering with cold. There was nobody. All the road was empty.

Someone's crying voice was coming. I walked very fast on the road and it was getting very dark. There were no street lights as well. I was in fear.

Suddenly, I watched a new born baby girl near the tree. The baby girl looked like dead. Someone had left her alone near the tree because she was a girl. I took the baby and wrapped in my stole. Then I moved fast towards the hospital and got her admitted. After the check-ups doctor said that she was fine. He further said, you have saved the life of a small baby. Then I felt very happy and proud of myself.

- Monika

DS/42/16

BA(P) 1st year

यह नीड़ मनोहर कृतियों का यह विश्वकर्म रंगस्थल है

है परंपरा लग रही यहां ठहरा जिसमें जितना बल है।

जयशंकर प्रसाद

Understanding Nationalism

Rakesh Kumar

It's a daunting task to write on an issue which has engulfed the whole country and divided the nation and its citizens into two broader categories: national or anti national. The paper seeks to investigate and examine the existing situation and tries to unearth the illusion of nationalism which can be seen everywhere and anywhere. In 2016, we have experienced a rapid surge in this feeling of nationalism at international as well as at national level. There is so much happening at international platform in the name of nationalism; the Syria attacks; rise of ISIS , Britain's exit from European union and Donald trump winning US president election. In India, every issue whether small or big is seen through the lens of nationalism. The word nationalism has become very popular and we need to understand key words before moving further.

Nation and nationalism are two words which have gain political currency in last couple of years. According to Cambridge dictionary, nation means 'a country, especially thought of as a large group of people living in one area with their own government, language, culture etc.' Nationalism is 'an extreme form of patriotism marked by a feeling of superiority over other countries' states Oxford dictionary. Nationalism is a very complicated term which involved a group of people sharing common past, culture, belief system and political ideology. If we see it historically, the sense of nation and nationalism emerged in western world and Europe was the centre of it. Colonialism also started with the idea of supreme and sovereign nation, which has right to rule over uncivilized one. In south -Asian context, nationalism emerged as a critique of colonialism. It was during world War-I, the idea of nation became stronger and people are ready to sacrifice anything for the pride and respect of nation. In Indian context, during World War II, the idea of nation became very profound and many political leaders and freedom fighters fought for the liberation of free nation. India as a nation was first seen in 1857 and it became a nation in 1947. There were many leaders who played significant role in making India a free nation like V.patel, J. Nehru, M. Azad, M. Gandhi etc.

Mahatma Gandhi played significant role in the building of India as a nation. He said "my own motive is to put forth all my energy in an attempt to save Indian, that is, ancient culture , from impending destruction by modern, that is western culture being imposed on India…"(Gandhi to mrs. Maddock, collected works of MK Gandhi, vol. 23, p. 243). He was determined that the most important task in the nation building is to develop a strong nationalist identity and character. The strong nationalist character can be prepared by '*swadeshi* spirit', '*satyagraha*' and some constructive programs like wearing and buying khadi

clothes rather than western. Gandhi was a true nationalist and he wanted to create a uniform and one nation. On the other hand Nehru and Tagore have different views on nationalism.

Tagore nationalism is not European one but he is in search of indigenous nationalism . He never wanted a nationalism which is immature, inhuman and brutal. His nationalism is based on human values and in which humanity always be a ruler. Tagore says "India had never had a real sense of nationalism. Even though from childhood I had been taught that idolatory of nation is almost better than reverence for god and humanity. I believe I have out grown that teaching and it is my conviction that my countrymen will gain truly their India by fighting against the education which teaches them that a country is greater than the ideals of humanity"(Nationalism in India).Tagore again called nationalism "as 'great menace'. It (nationalism) is the particular thing which for years has been at the bottom of India's troubles…"

Nehru thoughts on nationalism were unconventional and different from his contemporaries. He views on nationalism can be well understood in his letter to Indira Gandhi, written on 14th December, 1932. He said "nationalism is good in its place, but it is an unreliable friend and unsafe historian. It binds us to many happenings and sometimes distorts the truth, especially when it concerns our own history. So we have to be wary, when considering the recent history of India, lest one cast all the blame for our misfortunes on the British."

The contemporary Indian society is also under the influence of nationalism. In last one year, the supremacy of nationalism has engulfed large proportion of Indian population. In the name of nationalism, we have created divide between religious communities, people are killing in the name of religion and animals have become more important than human beings. Also nationalism is used as an ideological tool by political parties to control citizens and their thought process. Under nationalism, we are blindly glorifying the acts of army but we fail to respect the hard work of a peasant, a worker and a common man, all are also contributing in their own way in the development of nation. Also the plurality or diversity of our country is under threat as under nationalism; one nation, one religion, thinking is developing rapidly. In the name of nationalism, the government is blindly changing curriculum at school and university level as well. The government has scrapped German language in the middle of academic year and introduced Sanskrit in kendriya vidhaylayas. The intention behind this was to teach Indian language rather than any foreign language. The recent verdict of Supreme Court to stand for national anthem in cinema is another example where citizens are forced to prove their nationalism. It is said by many social scientists that the contemporary government and its notion of nationalism is somewhat similar to Hilter's regime.

Hitler's idea of nationalism is related to ethno symbolism. He established a close relation between race and nation. According to Hitler, state is not an economic organization but

a volkic organism. Which means state is there to preserve and safeguard the racial characteristic of humankind. Hitler developed the hierarchical racial discourse between us and them. This was very significant in ethnic nationalism. Germans were presented as pure, courageous and patriotic race while jews are presented as impure, corrupt race. He developed nationalism as cure to all problems. He presented that all the problems will be resolved by nation first policy. Nation is supreme, sovereign and authoritative for Hitler. He imagined a pure nation and for it he had sacrificed the lives of Jews and Germans. He believed in the purity of blood and race. He glorified Germans as pure race and people have to maintain purity by any means. It's his blind nationalism which led to the killing of thousands of innocent Jews.

Nationalism does not mean blindly praising the government, army or any politician. One cannot become nationalist by standing on national anthem or by inducting Sanskrit in curriculum. A person working for the development of peasants; working to eradicate class differences and caste discrimination and fighting for the rights for marginalized sections can be considered as nationalist. We need to expand our horizons rather than shrinking it.